राजस्थान क्लासेज

राजस्थान इतिहास

(RPSC & RSSB परीक्षाओं हेतु उपयोगी)

- ✓ NCERT & RBSE का सार संग्रह।
- ✓ परीक्षाओं के बदलते पैटर्न पर आधारित।
- ✓ परीक्षा उपयोगी एवं प्रामाणिक तथ्य।
- ✓ सरल भाषा एवं सुस्पष्ट लिखावट।

आदर्श कुमावत

BA-01

राजस्थान क्लासेज

" राजस्थान का इतिहास "

" प्रारंभ से एकीकरण तक "

- ✓ **RPSC & RSSB** की सभी परीक्षाओं हेतु उपयोगी |
- ✓ **NCERT & RBSE** पुस्तकों का सारांश |
- ✓ परीक्षा उपयोगी एवं **प्रामाणिक** तथ्य |
- ✓ परीक्षाओं के बदलते **पैटर्न** पर आधारित सामग्री |

लेखक

आदर्श कुमावत

BA, MA(History), BEd, BLIS, MLIS, PGDCA

आभार : मैं यह पुस्तक **माता पिता , गुरुजनों, मित्रगणों** व प्रिय **विद्यार्थियों** को समर्पित करता हूँ, प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से जिनका इस पुस्तक प्रकाशन मे सहयोग रहा है उन सभी का हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ – **" आदर्श कुमावत "**

विशेष सूचना : -

इस पुस्तक में प्रस्तुत सामग्री लेखक के कठिन परिश्रम और मौलिक अनुभवों का परिणाम है। हम आशा करते हैं कि आप लेखक के प्रयासों और ज्ञान की मौलिकता का सम्मान करेंगे।

लेखक की अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भी पृष्ठ, भाग, सारिणी या चित्र को किसी भी डिजिटल माध्यम (जैसे टेलीग्राम, व्हाट्सएप या अन्य सोशल मीडिया) पर साझा न करे एवं कॉपी पेस्ट न करे | ज्ञान को सही तरीके से आगे बढ़ाना ही एक आदर्श शिक्षक की पहचान है । आइए, शिक्षा की इस गरिमा को बनाए रखने में एक-दूसरे का सहयोग करें।

"शिक्षण की गरिमा और सामग्री की शुद्धता ही हमारी पहचान है।"

प्रकाशन एवं प्रबंधन

पुस्तक: राजस्थान का इतिहास

प्रकाशन: RAJASTHAN CLASSES

प्रथम संस्करण (2026)

बुक खरीदने के लिए - 8107670333 पर पेमेंट करके Whatsapp पर स्क्रीन शॉट, नाम व पूर्ण पता भेजें

हमसे जुड़ें :-

www.rajasthanclasses.in

अस्वीकरण (Disclaimer)

प्रस्तुत अध्ययन सामग्री को पूर्णतः त्रुटिरहित, प्रामाणिक और नवीनतम मानकों के अनुरूप बनाने हेतु लेखक द्वारा गहन शोध और अथक प्रयास किया गया है। तथापि, किसी भी अनपेक्षित तकनीकी त्रुटि, मुद्रण की भूल या व्याख्यात्मक भिन्नता के लिए प्रकाशक या लेखक विधिक रूप से उत्तरदायी नहीं होंगे।

पुस्तक प्राक्कथन :

प्रिय परीक्षार्थियों,

राजस्थान की विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में **'राजस्थान का इतिहास'** एक ऐसा खंड है, जिससे सर्वाधिक प्रश्न पूछे जाते हैं। वर्तमान परीक्षा पैटर्न में केवल तथ्यात्मक रटने के बजाय घटनाओं के क्रम, कारणों और उनके ऐतिहासिक प्रभावों की गहरी समझ होना आवश्यक हो गया है।

आपकी इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए, इस पुस्तक को **'Smart Study & Exam Oriented'** के सिद्धांत पर तैयार किया गया है।

इस पुस्तक की परीक्षा-उपयोगी विशेषताएँ:

1. **पॉइंट-टू-पॉइंट और तथ्यात्मक सामग्री (Fact-Based Approach):**
    - पाठ्यक्रम के हर एक टॉपिक को अनावश्यक विस्तार से बचाते हुए, सीधे उन बिंदुओं पर फोकस किया गया है जहाँ से आयोग (RPSC/RSMSSB) द्वारा बार-बार प्रश्न पूछे जाते हैं।
2. **विशेष 'वन-लाइनर' और सारणियाँ (Tables & Quick Revision):**
    - कम समय में बेहतर रिवीजन के लिए प्रत्येक अध्याय के अंत में प्रमुख तथ्यों, सन, संस्थाओं और राजवंशों की तुलनात्मक सारणियाँ दी गई हैं, जो परीक्षा के अंतिम दिनों में 'रामबाण' साबित होंगी।
3. **कठिन विषयों का सरल प्रस्तुतिकरण:**
4. **परीक्षा में पूछे जाने वाले संभावित प्रश्न (Exam Traps & Tips):**

यह पुस्तक केवल एक नोट्स संग्रह नहीं है, बल्कि यह आपके चयन (Selection) के मार्ग को सुगम बनाने के लिए एक सटीक अध्ययन मार्गदर्शिका है। इसे पूरी तल्लीनता से पढ़ें और अपनी तैयारी को अंतिम सफलता तक पहुँचाएँ।

आपकी सफलता की शुभकामनाओं के साथ!

— **आदर्श कुमावत (राजस्थान क्लासेज)**

अनुक्रमणिका

1. राजस्थान का प्रागैतिहासिक काल.....5
2. राजस्थान के प्रमुख प्राचीन सभ्यताएं.....7
3. राजपूतों की उत्पत्ति व प्रमुख सिद्धांत.....11
4. राजस्थान इतिहास के प्रमुख स्रोत.....12
5. गुर्जर प्रतिहार राजवंश.....17
6. मेवाड़ का गुहिल राजवंश.....19
7. वागड़ का गुहिल राजवंश.....37
8. मारवाड़ का इतिहास (राठौड राजवंश).....40
9. बीकानेर का इतिहास (राठौड़ राजवंश).....50
10. जयपुर का कच्छवाहा राजवंश.....55
11. अलवर का कच्छवाहा राजवंश.....67
12. अजमेर चौहान वंश.....69
13. अन्य चौहान वंश: रणथंभौर, जालौर , नाडोल, हाड़ौती,कोटा, सिरोही, झालावाड़.....71
14. भरतपुर का जाट राजवंश : 80
15. धौलपुर का जाट राजवंश 83
16. जैसलमेर का भाटी राजवंश.....84
17. अन्य राजवंश.....86
18. रियासतें व ब्रिटिश सन्धियां.....90
19. 1857 की क्रान्ति.....92
20. राजस्थान में किसान व जनजातीय आंदोलन.....96
21. राजस्थान मे सामाजिक प्रथाएँ व रोक 102
22. राजस्थान में पुनर्जागरण (राजनीतिक व सामाजिक संस्थाएं).....104
23. राजस्थान में प्रजामण्डल आन्दोलन.....112
24. राजस्थान का एकीकरण.....119
25. ऐतिहासिक व्यक्तित्व.....124
26. राजस्थान में नारियों का योगदान 134
27. मध्यकालीन प्रशासन एवं सामंत व्यवस्था.....138
28. सुपरसोनिक डोज (परीक्षा उपयोगी तथ्य).....140

.....****************.....

राजस्थान का प्रागैतिहासिक काल

❖ **राजस्थान नामकरण :**

❖ **1800 ई.** में सर्वप्रथम **जॉर्ज थामस** ने इस भू-भाग के लिए 'राजपूताना' शब्द का प्रयोग किया था।
❖ **1829 ई.** में 'एनल्स एण्ड एण्टीक्वीटीज ऑफ राजस्थान' पुस्तक में **कर्नल जेम्स टॉड** ने 'रायथान' या 'राजस्थान' रखा।
❖ **30 मार्च, 1949 ई.** को सर्वसम्मति से इसका नाम **राजस्थान** रखा गया। (1949 ई. से पूर्व 'राजस्थान' नाम से किसी भौगोलिक इकाई का अस्तित्व नहीं था)।

इतिहास का काल-विभाजन

❖ मानव की उत्पत्ति से वर्तमान तक के इतिहास को **तीन भागों** में बांटा है:

❖ <u>**प्राक् इतिहास**</u> **(25 लाख ई.पू. से 3000 ई.पू. तक):** इसके कोई भी लिखित साक्ष्य उपलब्ध नहीं है। पूर्णतः **पुरातत्व साक्ष्यों** पर आधारित इतिहास है। (जैसे- पाषाण काल)।

❖ <u>**आद्य इतिहास**</u> **(3000 ई.पू. से 600 ई.पू. तक):** इस काल में लिखित साक्ष्य तो उपलब्ध हैं, लेकिन उन्हें अभी तक प्रामाणिक तौर पर **पढ़ा नहीं जा सका** है। जैसे **सिंधु सरस्वती सभ्यता** और **वैदिक सभ्यता** आती हैं।

❖ <u>**ऐतिहासिक इतिहास**</u> **(600 ई.पू. से आरंभ):** इस काल का इतिहास लिखित व पुरातात्विक साक्ष्यों पर आधारित है तथा इसकी **लिपि को पढ़ने में सफलता** मिली है। इसकी शुरुआत **महाजनपद काल** से होती है।

❖ **राजस्थान का पाषाणकाल: तीन भागों** में बांटा गया **(1) पुरा पाषाण काल:** 6 लाख से 1.5 लाख ई.पू. **(2) मध्य पाषाण काल:** 1.5 लाख से 35 हजार ई.पू. **(3) उत्तर(नव)पाषाण काल:** 35 हजार से 10 हजार ई.पू.

(1) पुरा पाषाण काल

❖ **1870 ई.** में **सी.ए. हैकट** ने 'हैण्डऐक्स', 'ऐशूलियन' व 'क्लीवर' जैसे पाषाण कालीन उपकरण जयपुर एवं इन्द्रगढ़ से प्राप्त हुए, जो वर्तमान में भारतीय संग्रहालय कलकत्ता में सुरक्षित हैं।

❖ राजस्थान में पुरातात्विक सर्वेक्षण का कार्य सबसे पहले **1871 ई.** में **ए.सी.एल. कार्लाइल** ने प्रारम्भ किया था, जिन्होंने दौसा क्षेत्र से कठोर पाषाण उपकरणों और मानव अस्थियों की खोज की।

❖ झालावाड़ जिले में **1908 ई.** में **सेटनकार** को इस काल के कुछ उपकरण मिले।

❖ वीरेन्द्रनाथ मिश्र ने 1959 ई. में चित्तौड़ जिले में गंभीरी व बेड़च नदी के पेटे से पाषाण उपकरण प्राप्त किए थे।

❖ बूढ़ा पुष्कर (अजमेर) एवं जैसलमेर से मध्य पाषाणकाल के उपकरण-**1971-76** में डॉ. आल्चिन, के.टी.एम. हेगड़े द्वारा खोज।

❖ जालोर मे खोज का श्रेय- **बी. आल्चिन** को जाता है।

❖ **'दर' नामक स्थान** (भरतपुर) से चित्रित शैलाश्रय मिलें, जिन पर मानवाकृति, व्याघ्र, बारहसिंगा तथा सूर्य आदि के चित्र अंकित हैं।

❖ पुरापाषाणकालीन मानव का मुख्य आहार- शिकार से प्राप्त वन्य जीव, कन्द मूल, फल, पक्षी और मछली आदि थे।

❖ **प्राप्त उपकरण-** हथकुल्हाड़ी (Hand axe), क्लीवर (Cleaver), चॉपर (Chopper), कोर (Core), डिस्क (Disc), ब्लेड (Blade) आदि प्रमुख हैं। (क्वार्टजाइट, सैण्डस्टोन, लैट्राइट, कैल्सीडोनी आदि से बने उपकरण)

❖ **पुरापाषाण प्रमुख स्थल:** नगरी, खोर, ब्यावर, खेड़ा,अनचर, ऊणचा देवड़ी, हीरजी का खेड़ा, बल्लू खेड़ा (चित्तौड़ जिले की गंभीरी नदी के मुहाने पर),
❖ हमीरगढ़, स्वरूपगंज, बीगोद, जहाजपुर, खुरियास, देवली, मंगरोप, दुरिया, गोगोखेड़ा, पुर, पतला, कुंवारिया, गिलूंड (राजसमंद जिले में बनास के तट पर)
❖ लूणी (जोधपुर में लूणी के तट पर)
❖ सिंगारी और पाली (गुहिया और बांडी नदी की घाटी में)
❖ समदड़ी, शिकारपुरा, भावल, पीचक, भांडेल, धनवासनी, सोजत, धनेरी, भेटाण्डा, धुंधाडा, गोलियों, पीपाड़, खींवसर, उम्मेदनगर (मारवाड़ में)
❖ गागरोन (झालावाड़), गोविन्दगढ़ (अजमेर जिले में सागरमती के तट पर)
❖ कोकानी (कोटा जिले में परवन नदी के तट पर)
❖ भुवाण, हीरो, जगन्नाथपुरा, सियलपुरा, पच्चर, तारावट, गोगसला, भरनी (टोंक जिले में बनास तट पर)
❖ भैंसरोडगढ़, नंगघाट (चम्बल और बामनी के तट पर)

राजस्थान की प्रमुख सभ्यताएं

कालीबंगा सभ्यता (हनुमानगढ़) –

- हनुमानगढ़ जिला, घग्घर नदी (प्राचीन सरस्वती/द्वषद्वती) के बाएं तट पर।
- **खोज:** 1952 में **अमलानंद घोष** ने।
- **उत्खनन 5 स्तरों मे:** 1961-1969 के बीच **बी.बी. लाल** (बृजवासी लाल) एवं **बी.के. थापर** (बालकृष्ण थापर), जे.पी. जोशी, एम.डी. खरे द्वारा ।
- 1 & 2 चरण- सिन्धु सभ्यता से भी प्राचीन ।
- 2, 3 & 4 चरण–सिन्धु सभ्यता के समकालीन।
- **शाब्दिक अर्थ:** काले रंग की चूड़ियाँ (पंजाबी शब्द)।
  - **डॉ. दशरथ शर्मा** ने इसे सिंधु घाटी साम्राज्य की **"तीसरी राजधानी"** कहा है।
  - विश्व में **सर्वप्रथम जुते हुए खेत के साक्ष्य** (एक साथ दो फसलें: गेहूं + जौ) यहीं मिले।
  - **भूकंप के प्राचीनतम साक्ष्य**
  - **7 अग्नि वेदिकाएं (हवन कुंड)** मिली हैं, जिनमें पशु हड्डियां मिली हैं (बली प्रथा का संकेत)।
  - **दीन-हीन बस्ती:** मकान कच्ची ईंटों से बने थे (ईंटों का आकार 30×15×7.5 सेमी, अनुपात 4:2:1)। यहाँ अलंकृत ईंटों के फर्श का एकमात्र साक्ष्य मिला है।
  - विश्व में एकमात्र **लकड़ी की नाली** के साक्ष्य मिले ।
  - एक बालक की खोपड़ी मिली है जिसमें 6 छेद थे
  - **कालीबंगा के दो भाग –** पूर्व मे नगर व पश्चिम भाग मे दुर्ग अवस्थित है ।
  - यहाँ की लिपि दाएं से बाएँ और लिखी जाती थी ।
  - व्याघ्र (टाइगर) का चित्र अंकित बेलनाकार तंदूर और मेसोपोटामिया की मोहरें मिली हैं।

आहड़ सभ्यता (उदयपुर) – *ताम्रयुगीन*

- **स्थान -** उदयपुर , आयड़ या बेड़च नदी के किनारे। (यह बनास संस्कृति का हिस्सा है)।
- **खोज:** 1953 में **अक्षय कीर्ति व्यास** ने।
- **उत्खनन :** 1956 में आर. सी. अग्रवाल और 1961 में एच. डी. सांकलिया (पुणे विश्वविद्यालय) द्वारा।
- **उपनाम : ताम्रवती नगरी** (तांबा गलाने के उद्योग के कारण), मृतकों का टीला ।
  - 10वीं-11वीं सदी का नाम: **अघाटपुर / आघटदुर्ग** ।
  - स्थानीय नाम: **धूलकोट** (धूल रेत का टीला)।
  - यहाँ तांबा गलाने की भट्टियां और तांबे की 6 यूनानी मुद्राएं व 3 मोहरें मिली हैं।
  - एक मुद्रा पर यूनानी देवता **'अपोलो'** अंकित है जिसके हाथ में तीर और पीछे तरकश है।
  - उल्टी बनाई पद्धति (Black and Red Ware) के बर्तन मिले हैं। अनाज रखने के इन बड़े कोठों/पात्रों को स्थानीय भाषा में **'गोरे' या 'कोट'** कहा जाता है।
  - **बनासीयन बुल** मिट्टी से बनी बैल की आकृति व **बिना हत्थे का जलपात्र** मिला ।
  - **सामूहिक भोजन:** एक घर में 4 से 6 चूल्हे मिले हैं, जो संयुक्त परिवार प्रथा का प्रमाण हैं।
  - **लेपिस लाजुली** नीले रंग का पत्थर मिला ।

बैराठ सभ्यता (कोटपुतली-बहरोड़)

- **स्थान व नदी: कोटपुतली-बहरोड़** , बाणगंगा नदी के किनारे।
- **खोज व उत्खनन:** 1936 में **दयाराम साहनी** द्वारा।
- पुन: उत्खनन (1962-63) नील रत्न बनर्जी और कैलाश नाथ दीक्षित द्वारा।
- **प्रमुख पहाड़ियां:** बीजक की पहाड़ी, भीम जी की डूंगरी, भोमली की डूंगरी, महादेव जी की डूंगरी।
- **महत्वपूर्ण फैक्ट्स:**
  - **भाब्रू शिलालेख :** प्रारम्भिक खोज 1837 में **कैप्टन बर्ट** ने बीजक की पहाड़ी से सम्राट अशोक का शिलालेख खोजा। (वर्तमान में यह 'एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल', कोलकाता में है)।
  - भारत में सर्वप्रथम **गोल बौद्ध मंदिर** और स्तूप के अवशेष यहीं से मिले हैं।
  - **मुद्राएं: 36 चांदी की मुद्राएं** मिली , जिनमें से 8 पंचमार्क (आहत) सिक्के हैं और 28 इंडो-ग्रीक (हिंद-यवन) राजाओं के सिक्के हैं (16 सिक्के राजा मिनेन्डर के हैं)।

गुर्जर-प्रतिहार राजवंश :

1. उत्पत्ति एवं प्रारंभिक :

गुर्जर-प्रतिहार राजवंश : राजस्थान और उत्तर भारत के इतिहास का एक अत्यंत शक्तिशाली और गौरवशाली राजवंश है। 6वीं से 11वीं शताब्दी तक इन्होंने भारत की उत्तर-पश्चिमी सीमा पर अरब आक्रमणकारियों को रोके रखा।

- **'प्रतिहार' का अर्थ:** द्वारपाल या रक्षक। ये स्वयं को भगवान राम के भाई **लक्ष्मण का वंशज** मानते हैं।
- **'गुर्जर' शब्द का अर्थ:** मूलतः यह एक **भौगोलिक क्षेत्र (गुर्जरात्रा - जोधपुर-पाली का क्षेत्र)** का नाम था, जहाँ शासन करने के कारण ये 'गुर्जर-प्रतिहार' कहलाए।
- **मुंहणौत नैणसी के अनुसार:** प्रतिहारों की कुल **26 शाखाएं** थीं, जिनमें से दो सबसे प्रमुख थीं:

1. **मण्डोर शाखा** (सबसे प्राचीन शाखा)
2. **भीनमाल / उज्जैन शाखा** (शक्तिशाली शाखा)

- **शिलालेखीय प्रमाण:**
  - **एहोल अभिलेख (634 ई.):** चालुक्य राजा पुलकेशिन II के इस लेख में सर्वप्रथम 'गुर्जर' जाति का उल्लेख मिलता है।
  - **घटियाला शिलालेख (861 ई.):** इसमें मंडोर के प्रतिहारों की वंशावली मिलती है।

2. मण्डोर के प्रतिहार (प्राचीन शाखा)

- **संस्थापक/आदिपुरुष: हरिश्चंद्र (उपनाम: रोहिल्लद्धि)**। यह एक विद्वान ब्राह्मण थे।
- **दो पत्नियां:** हरिश्चंद्र की दो पत्नियां थीं:

1. **ब्राह्मणी पत्नी:** इनसे उत्पन्न संतानें ब्राह्मण प्रतिहार कहलाईं।
2. **क्षत्रिय पत्नी (भद्रा):** इनसे उत्पन्न संतानें क्षत्रिय प्रतिहार कहलाईं। भद्रा के चार पुत्र थे—भोगभट्ट, कद्दल, रज्जिल और दद।

- **रज्जिल:** इन्होंने मण्डोर को अपनी राजधानी बनाया और राजसूय यज्ञ किया। रज्जिल के पुत्र नरभट्ट को पैलापेली की उपाधि दी गई थी।
- **नागभट्ट प्रथम:** इन्होंने राजधानी को मण्डोर से **मेड़ता (मेड़न्तक)** स्थानांतरित किया।
- **शिलुक :** इनके दो पुत्र -बाउक और कक्कुक।
- **बाउक:** इन्होंने 837 ई. में मण्डोर में एक प्रशस्ति (मण्डोर अभिलेख) लगवाई।
- **कक्कुक:** इन्होंने 861 ई. में **घटियाला शिलालेख** उत्कीर्ण करवाया, जिसमें राजस्थान में **सती प्रथा का प्रथम लिखित साक्ष्य** मिलता है।

3. भीनमाल-उज्जैन-कन्नौज के प्रतिहार (मुख्य शाखा)

◦ नागभट्ट प्रथम (730 – 760 ई.) –

- इन्होंने भीनमाल (जालौर) को अपनी राजधानी बनाया और बाद में उज्जैन पर अधिकार किया।
- **उपाधियां: 'नागावलोक', 'नारायण का अवतार',** और **'मलेच्छों का नाशक'** (ग्वालियर प्रशस्ति के अनुसार, क्योंकि इन्होंने अरब आक्रमणकारी जुनैद को हराया था)।
- **ग्वालियर प्रशस्ति:** इनके दरबार को 'नागावलोक का दरबार' कहा जाता था।

◦ वत्सराज (783 – 795 ई.) – साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक

- देवराज की राणी भूमिका देवी से उत्पन्न पुत्र ।
- **उपाधियां: 'रण हस्तिन'** (युद्ध में हाथी के समान)
- **त्रिपक्षीय संघर्ष की शुरुआत:** कन्नौज पर अधिकार के लिए प्रतिहार, पाल (बंगाल) और राष्ट्रकूट (दक्षिण भारत) के बीच 200 वर्षों तक चले संघर्ष की शुरुआत वत्सराज ने की। इन्होंने पाल राजा धर्मपाल को हराया, लेकिन राष्ट्रकूट राजा ध्रुव से हार गए।

6.

मेवाड़ का गुहिल राजवंश :

सामान्य परिचय

- **कुलदेवी:** बाण माता।
- **आराध्य देव: एकलिंगनाथ जी (शिव)**। मेवाड़ के राजा स्वयं को एकलिंग जी का **'दीवान'** मानते थे।
- **आशका लेना:** मेवाड़ के राजा जब भी राजधानी छोड़ते या युद्ध पर जाते, तो एकलिंग जी से अनुमति (आज्ञा) लेते थे, जिसे स्थानीय भाषा में 'आशका लेना' कहा जाता था।
- **राजवाक्य:** *"जो दृढ राखे धर्म को, तिहीं राखे करतार"* (अर्थात् जो धर्म पर अडिग रहता है, ईश्वर उसकी रक्षा करता है)। यह वाक्य मेवाड़ के राजचिह्न पर अंकित है।
- **राजचिह्न पर अंकित चित्र:** राजचिह्न के एक तरफ क्षत्रिय राजा (महाराणा) और दूसरी तरफ **धनुष-बाण लिए भील योद्धा** का चित्र अंकित है, जो भीलों के प्रति सम्मान को दर्शाता है।

गुहिल वंश की उत्पत्ति के सिद्धांत

- **अबुल फजल के अनुसार:** गुहिल ईरान के नौशेखां आदिल के वंशज हैं।
- **कर्नल जेम्स टॉड के अनुसार:** ये वल्लभी (गुजरात) के राजा शिलादित्य की संतान हैं।
- **डॉ. गोपीनाथ शर्मा और कुंभलगढ़ प्रशस्ति के अनुसार:** आनंदपुर के ब्राह्मण माना।
- डॉ ओझा के अनुसार गुहिल **सूर्यवंशी** राजपूत थे।
- मुहनौत नेणसी ने **गुहिलों की 24** शाखाएँ बताई।

राजवंश की स्थापना: गुहादित्य (566 ई.)

- **संस्थापक/मूलपुरुष: गुहादित्य (या गुहिल)**।
- **स्थापना वर्ष: 566 ई.** में इन्होंने मेवाड़ में गुहिल वंश की नींव रखी।
- गुहादित्य का पालन-पोषण वीरनगर की कमलावती नामक ब्राह्मणी ने किया था।

बप्पा रावल (734 – 753 ई.) –

- गुहिल वंश का वास्तविक संस्थापक
- **मूल नाम: कालभोज** (बप्पा रावल इनकी उपाधि थी, जो इन्हें इनके गुरु हारित ऋषि ने दी थी)।
- **चित्तौड़ विजय (734 ई.):** बप्पा रावल ने 734 ई. में चित्तौड़ के मौर्य शासक **मान मोरी** को पराजित करके चित्तौड़गढ़ दुर्ग पर अधिकार कर लिया।
- **नागदा (उदयपुर)** को मेवाड़ की प्रथम राजधानी बनाया।
- बप्पा रावल ने **कैलाशपुरी (उदयपुर)** में आराध्य देव एकलिंगनाथ जी मंदिर का निर्माण करवाया।
  - इन्होंने अरब आक्रमणकारी **जुनैद** और उसके सेनापतियों को सिंध से आगे खदेड़ा।
  - अरबों को खदेड़ते हुए ये गजनी (अफगानिस्तान) तक गए, ईरान ईराक खुरासान तक क्षेत्र जीता।
  - **रावलपिंडी शहर का नाम:** बप्पा रावल के सैन्य शिविर के कारण ही पड़ा था (रावल का पिंड/गाँव)।
- बप्पा रावल ने मेवाड़ में **सोने के सिक्के** चलाए। इनके मिले सिक्के का वजन **115 ग्रेन** है,
- **उपाधियां : सी. वी. वैद्य** ने बप्पा रावल की तुलना **'चार्ल्स मार्टेल'** (फ्रांसीसी सेनापति) से की है। इन्हें 'हिंदू सूरज', 'राजगुरु' और 'चकवे' (चारों दिशाओं का विजेता) भी कहा जाता है।

राजा अल्लट (10वीं शताब्दी)

- **आहड़** को दूसरी व्यापारिक राजधानी बनाया।
- मेवाड़ में सर्वप्रथम **नौकरशाही** का गठन राजा अल्लट ने ही किया था (इसका प्रमाण 953 ई. की सारणेश्वर प्रशस्ति से मिलता है)
- अल्लट ने हूण राजकुमारी **हरिया देवी** से विवाह किया। यह राजस्थान के इतिहास का **पहला अंतर्राष्ट्रीय विवाह** माना जाता है।
- **अल्लट ने** आहड़ में भगवान विष्णु के **'वराह मंदिर'** का निर्माण करवाया था।

- **उत्तराधिकार का विवाद:** उदयसिंह अपनी भटियानी रानी (धीरबाई) के प्रभाव में थे, इसलिए उन्होंने अपने सबसे योग्य और बड़े पुत्र प्रताप के स्थान पर छोटे पुत्र **जगमाल** को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया था।
- मेवाड़ के सामंतों (जैसे अखैराज सोनगरा और रामशाह तोमर) ने जगमाल को गद्दी से उतार दिया और **28 फरवरी, 1572 को गोगुंदा में ही महाराणा प्रताप का राज्याभिषेक** कर दिया। गद्दी से हटाया गया जगमाल नाराज होकर अकबर की शरण में चला गया।
- **दताणी का युद्ध (1583 ई):** सिरोही राव सुरताण व जगमाल के मध्य, इस युद्ध मे जगमाल मारा गया।

महाराणा प्रताप: (1572–1597 ई.)

- **जन्म तिथि: 9 मई, 1540 ई.** (विक्रम संवत 1597, ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया)।
- **जन्म स्थान: बादल महल**, कटारगढ़ (कुंभलगढ़ दुर्ग, राजसमन्द)।
- पिता-**महाराणा उदयसिंह** और माता-**जयवन्ता बाई** (पाली के अखैराज सोनगरा चौहान की पुत्री)।
- प्रताप को बचपन में **'कीका'** कहा जाता था (स्थानीय भील भाषा में छोटे बच्चे को कीका कहते हैं)।
- इनका विवाह 17 वर्ष की आयु मे **अजबदे पंवार** (बिजोलिया के राव रामरख पंवार की पुत्री) से हुआ, जिनसे **अमरसिंह प्रथम** का जन्म हुआ।

राज्याभिषेक एवं गद्दी प्राप्ति

- **प्रथम राज्याभिषेक: 28 फरवरी, 1572 ई. (होली के दिन)**, गोगुंदा (में 32 वर्ष की आयु में हुआ।
- **राजमहलों की क्रांति:** पिता उदयसिंह द्वारा छोटे बेटे जगमाल को उत्तराधिकारी बनाने के फैसले को पलटकर मेवाड़ के सामंतों ने प्रताप को गद्दी पर बैठाया, जिसे 'राजमहलों की क्रांति' कहा जाता है।
- **द्वितीय (विधिवत) राज्याभिषेक:** प्रताप का औपचारिक और धूमधाम से राज्याभिषेक **कुंभलगढ़ दुर्ग** में हुआ, जिसमें मारवाड़ के शासक **राव चंद्रसेन** भी शामिल हुए थे।

अकबर के 4 शिष्टमंडल

अकबर ने महाराणा प्रताप को अधीनता स्वीकार कराने के लिए 1572 से 1573 ई. के बीच चार दूत भेजे, चारो विफल रहे। (शॉर्ट ट्रिक: **जमाभाटो**):

1.	**ज**लाल खाँ कोरची (सित-नवंबर, 1572) –सबसे पहले भेजा जाने वाला दूत
2.	**मा**नसिंह (जून, 1573) – आमेर के राजकुमार।
3.	**भ**गवानदास (सितंबर, 1573) – मानसिंह के पिता।
4.	**टो**डरमल (दिसंबर, 1573) – अंतिम दूत

हल्दीघाटी ऐतिहासिक युद्ध (18 जून, 1576 ई.)

- महाराणा प्रताप की सेना के सेनापति **हकीम खाँ सूरी** थे।
- मुगल सेना का मुख्य सेनापति **कुंवर मानसिंह** था, मानसिंह को सेनापति बनाए जाने पर मुगलों मे नाराजगी थी, हिन्दू सेनापति होने के कारण **नकीब खां** ने युद्ध मे जाने से मना कर दिया था।
- **हल्दीघाटी के उपनाम:**
  - **'मेवाड़ की थर्मोपोली'** – कर्नल जेम्स टॉड ने कहा।
  - **'खमनौर का युद्ध'** – अबुल फजल ने कहा।
  - **'गोगुंदा का युद्ध'** – अब्दुल कादिर बदायूँनी ने कहा (यह इस युद्ध में उपस्थित एकमात्र इतिहासकार)
  - **'बनास का युद्ध'** – बनास नदी के किनारे लड़े जाने के कारण।

❖ **प्रताप की सेना का विभाजन 4 भागो मे :**
○ **हरावल :** नेतृत्व हकीम सूर, सहयोगी -सलुम्बर के चुण्डावत कृष्णदास, सरदारगढ़ का भीम सिंह, देवगढ का रावत सांगा,बदनोर का रामदास।
○ **दक्षिण पार्श्व :** नेतृत्व ग्वालियर के रामशाह द्वारा।
○ **वाम पार्श्व :** नेतृत्व मानसिंह झाला, सहयोगी -झाला बीदा, जालोर के मानसिंह सोनगरा।
○ **चंदावल :** पानरवा का पूंजा और पुरोहित गोपीनाथ, जगन्नाथ ,महता रतनचंद, चारण केशव व जैसा।

❖ गुहिल वंश क्रम से :-

- ✓ गुहिल (गुहादित्य)
- ✓ भोज
- ✓ महेंद्र प्रथम
- ✓ नागादित्य
- ✓ बप्पारावल (कालभोज)
- ✓ अवकुट
- ✓ बाणभट्ट
- ✓ सिंहराज
- ✓ खुमाण प्रथम
- ✓ भर्पट द्वितीय
- ✓ सिंहराज
- ✓ खुमाण द्वितीय
- ✓ महासंपद्
- ✓ खुमाण तृतीय

- ✓ शक्ति कुमार
- ✓ वाचस्पति
- ✓ वैरीसिंह
- ✓ विजयसिंह
- ✓ अरिसिंह प्रथम
- ✓ चोडासिंह
- ✓ विक्रमसिंह
- ✓ करणसिंह प्रथम
- ✓ क्षेमसिंह
- ✓ सामंतसिंह
- ✓ कुमारसिंह –
- ✓ मथनसिंह
- ✓ पद्मसिंह
- ✓ जैत्रसिंह (1213)
- ✓ तेजसिंह
- ✓ समरसिंह

1. रतनसिंह (1302–1303 ई.)
2. महाराणा हम्मीर (1326–1364 ई.) -
3. महाराणा क्षेत्रसिंह / खेता (1364–1382 ई.)
4. महाराणा लाखा / लक्षसिंह (1382–1421 ई.) -
5. महाराणा मोकल (1421–1433 ई.)
6. महाराणा कुम्भा (1433–1468 ई.)
7. महाराणा उदा (उदयसिंह प्रथम) (1468–1473 ई.)
8. महाराणा रायमल (1473–1509 ई.)
9. महाराणा सांगा (संग्राम सिंह प्रथम) (1509–1528 ई.)
10. महाराणा रत्नसिंह द्वितीय (1528–1531 ई.)
11. महाराणा विक्रमादित्य (1531–1536 ई.)
12. बनवीर (दासी पुत्र)
13. महाराणा उदयसिंह द्वितीय (1537–1572 ई.)
14. महाराणा प्रताप (1572–1597 ई.)
15. महाराणा अमर सिंह प्रथम (1597–1620 ई.)
16. महाराणा कर्ण सिंह (1620–1628 ई.)
17. महाराणा जगत सिंह प्रथम (1628–1652 ई.)
18. महाराणा राजसिंह प्रथम (1652–1680 ई.)
19. महाराणा जयसिंह (1680–1698 ई.)
20. महाराणा अमर सिंह द्वितीय (1698–1710 ई.)
21. महाराणा संग्राम सिंह द्वितीय (1710–1734 ई.)
22. महाराणा जगत सिंह द्वितीय (1734–1751 ई.)
23. महाराणा प्रताप सिंह द्वितीय (1751–1754 ई.)
24. महाराणा राजसिंह द्वितीय (1754–1761 ई.)
25. महाराणा अरीसिंह द्वितीय (1761–1773 ई.)
26. महाराणा हम्मीर सिंह द्वितीय (1773–1778 ई.)
27. महाराणा भीम सिंह (1778–1828 ई.)
28. महाराणा जवान सिंह (1828–1838 ई.)
29. महाराणा सरूप सिंह (1838–1861 ई.)
30. महाराणा शंभू सिंह (1861–1874 ई.)
31. महाराणा सज्जन सिंह (1874–1884 ई.)
32. महाराणा फतेह सिंह (1884–1930 ई.)
33. महाराणा भोपाल सिंह (1930–1956 ई.)

मारवाड़ का इतिहास (राठौड़ राजवंश)

◇ राठौड़ो के उत्पति के सिद्धांत :

- **उत्पत्ति का मुख्य मत:** मुहनौत नेणसी, पृथ्वीराज रासो, जोधपुर की ख्यात और इतिहासकार जी.एच. ओझा के अनुसार मारवाड़ के राठौड़ **कन्नौज के वंशज** थे।
- **राष्ट्रकूट शब्द से उत्पत्ति:** कर्नल जेम्स टॉड के अनुसार 'राठौड़' शब्द संस्कृत के **'राष्ट्रकूट'** शब्द का अपभ्रंश है।
- विश्वेश्वर रेऊ व कर्नल टॉड ने **कनौज के जयचंद गहड़वाल की संतान** बताया।
- दयालदास ने अपनी ख्यात मे राठोड़ो को सूर्यवंशी बताकर ब्राह्मण भल्लराव की सन्तान बताया
- **कुलदेवी:** राठौड़ों की कुलदेवी **नागणेची माता** हैं।
- **इष्ट देवी -**इनके इष्टदेवी **चामुंडा माता** है।
- **मारवाड़ का प्राचीन नाम:** इस क्षेत्र को प्राचीन काल में **'मरुवार'** या **'मरुस्थल'** कहा जाता था।

राव सीहा (1240 – 1273 ई.)

- राव सीहा मारवाड़ के राठौड़ राजवंश का **'संस्थापक'**, **'मूलपुरुष'** या **'आदिपुरुष'** है।
- यह कन्नौज के सेतराम के पुत्र थे, जो 1240 ई. के आसपास मारवाड़ के पाली क्षेत्र में आए थे।
- पाली के स्थानीय 'पालीवाल ब्राह्मणों' को मेरों और मुस्लिम लुटेरों के आतंक से मुक्ति दिलाने के लिए राव सीहा मारवाड़ आए और यही बस गए।
- **बीठू गाँव का लेख - 1273 ई.):** पाली के बीठू गाँव से प्राप्त लेख के अनुसार 1273 ई. मे सिंध के मुस्लिम लुटेरो से लड़ते हुए राव सीहा वीरगति को प्राप्त हुए, (ये युद्ध **धौला चौतरा नामक स्थान** पर हुआ था, इस युद्ध मे 1 लाख व्यक्ति घायल हुए इस लिए युद्ध को **लाख झंवर** कहा गया) इस लेख मे उल्लेख मिलता है कि सीहा, सेतराम के पुत्र थे, सीहा की रानी पार्वती (सोलंकी वंश से)।
- **आस्थान (1273-91 ई.)** सीहा व रानी पार्वती के पुत्र 1291 ई. मे जलालुदीन खिलजी की सेना के पाली आक्रमण के दौरान आस्थान वीर गति को प्राप्त हुए

राव धुहड़: (1291-1309 ई.)

- ये कर्नाटक से राठौड़ो की कुलदेवी **चक्रेश्वरी माता** की लकड़ी की मूर्ति लेकर आए और बालोतरा के **'नागाणा'** गांव में स्थापित की, जिसके बाद माता का नाम **'नागणेची माता'** पड़ा।
- धूहड़ ने प्रतिहारो को हराकर मंडोर पर भी अधिकार किया।
- **धूहड़ के बाद क्रमश: शासक रायमल > कर्णपाल > भीम > जाल्हणसी > राव छाडा > राव तीडा >**
- **राव मल्लीनाथ:** इनके नाम पर ही बाड़मेर के क्षेत्र का नाम **'मालानी'** पड़ा। इन्होंने **'मेवानगर' (नाकोड़ा)** को अपनी राजधानी बनाया था। मल्लिनाथ ने तुर्कों को पराजित कर **रावल की उपाधि** धारण की।

राव चूंडा (1384 – 1423 ई.)

- **वास्तविक संस्थापक:** इन्होंने बिखरी हुई सत्ता को एक सुदृढ़ राज्य में बदला।
- **मंडोर की प्राप्ति (दहेज में):** इंदा परिहारों ने तुर्कों के प्रभाव से परेशान होकर अपनी पुत्री का विवाह राव चूंडा से कर **मंडोर दुर्ग इन्हें दहेज में सौंप दिया।**
- मंडोर मिलने के बाद राव चूंडा ने मंडोर को मारवाड़ की **पहली स्थायी राजधानी** बनाया।
- मारवाड़ में सबसे पहले **सामंती व्यवस्था की शुरुआत** करने का श्रेय राव चूंडा को ही जाता है।
- इनकी रानी चांदकंवर ने जोधपुर में **'चांदबावड़ी'** का निर्माण करवाया और राव चूंडा ने नागौर के पास 'चूंडासर तालाब' बनवाया था।
- **निधन:** 7 नवंबर, 1562 ई. को इस महान विजेता शासक का जोधपुर में निधन हो गया।

◇ राव चंद्रसेन (1562 – 1581 ई.)

- जन्म – 16 जुलाई 1541 ई.
- राव मालदेव व झाला रानी स्वरूपदे के पुत्र।
- **राज्याभिषेक- 31 दिसम्बर 1562 ई. में :** मालदेव ने अपने बड़े बेटों (राम और उदयसिंह) को छोड़कर रानी स्वरुपदे के प्रभाव से योग्य पुत्र **राव चंद्रसेन** को अपना उत्तराधिकारी बनाया।
- **जोधपुर पर मुगल अधिकार:** अकबर ने हुसैन कुली खाँ के नेतृत्व में सेना भेजकर 1564 ई. में जोधपुर दुर्ग पर अधिकार कर लिया था, जिसके बाद चंद्रसेन **भाद्राजून (जालोर)** चले गए।
- **लोहावट का युद्ध (1563 ई.):** चंद्रसेन ने अपने बड़े भाई उदयसिंह (जो मुगलों की सहायता लेने चला गया था) को लोहावट के युद्ध मे बुरी तरह घायल व् पराजित किया था।

  - **मारवाड़ का प्रताप:** प्रताप की तरह मुगलों की अधीनता स्वीकार न करने के कारण।
  - **प्रताप का अग्रगामी / पथ-प्रदर्शक:** महाराणा प्रताप से पहले मुगलों के खिलाफ छापामार (गोरिल्ला) युद्ध नीति अपनाने के कारण।
  - **मारवाड़ का भूला-बिसरा राजा :**

अकबर का नागौर दरबार (नंवबर 1570 ई.)

- **उद्देश्य:** जिसका वास्तविक उद्देश्य राजपूताना के राजाओं को अपनी अधीनता स्वीकार करवाना था।
- **चंद्रसेन का रुख:** राव चंद्रसेन भी नागौर दरबार में गए थे, लेकिन वहां अपने भाइयों (राम और उदयसिंह) को मुगलों के पक्ष में देखकर और अकबर की कूटनीति भांपकर बिना अधीनता स्वीकार किए **दरबार छोड़कर वापस चले गए**।
- **अधीनता स्वीकारने वाले शासक :** बीकानेर के **राव कल्याणमल**, जैसलमेर के हरराय भाटी, मेड़ता के **वीरमदेव, कोटा के दुर्जन शाल हाडा** ने अकबर की अधीनता स्वीकार की।
- चंद्रसेन के विरोधी रुख के कारण अकबर ने 1572–1574 ई. के बीच में बीकानेर के **कुंवर रायसिंह** को जोधपुर का प्रशासक नियुक्त किया था।
- **1573 ई.** मे चन्द्रसेन के विरुद्ध अकबर ने शाह कुली खां के नेतृत्व मे सेना भेजी जिसमे जगतसिंह केशवदास मेडतिया , बीकानेर के रायसिंह शामिल थे, ये सेना सोजत से खाली हाथ असफल लौटी।
- **1575 ई.** मे अकबर ने जलाल खां के नेतृत्व मे एक बार पुन: सेना सिवाना भेजी, चन्द्रसेन के हाथो जलाल खां मारा गया।
- अकबर ने शाहबाज खां के नेतृव मे सिवाणा ज़ीतने के लिए पुन सेना भेजी, इस बार जीतने मे सफल।
- अकबर ने नागौर प्रवास के दौरान वहां '**शुक्र तालाब**' का निर्माण करवाया था।

चंद्रसेन का संघर्ष और अंतिम समय

- पोकरण पर भाटियो का अधिकार : 1575 मे जब चन्द्रसेन का परिवार पोकरण किले मे था उस समय जैसलमेर के हरराय भाटी ने 4 माह के लिए पोकरण किले को 7000 की सेना से घेर लिया था आखिर एक लाख फदिये मे पोकरण दुर्ग भाटियो की देना पड़ा।
- भाद्राजून पर मुगलों के अधिकार के बाद चंद्रसेन ने **सिवाना दुर्ग (बाड़मेर)** को अपना केंद्र बनाया। सिवाना को '**मारवाड़ के राजाओं की शरणस्थली**' कहा जाता है।
- **निधन:** चंद्रसेन आजीवन पहाड़ों में भटकते रहे लेकिन मुगलों की अधीनता स्वीकार नहीं की। **11 जनवरी, 1581 ई.** को सारण के पहाड़ों में '**सोजत/सच्चियाप**' नामक स्थान पर इनका निधन हो गया। यहाँ उनकी अश्वारुढ़ प्रतिमा व समाधि बनी हुई है।
- जोधपुर राज्य की ख्यात के अनुसार चन्द्रसेन के एक **सामंत वैरसल** ने विश्वासघात कर भोजन मे जहर दे दिया जिससे उनकी मृत्यु हो गई।चंद्रसेन की मृत्यु के बाद अकबर ने 1581 - 1583 ई. तक जोधपुर को '**खालसा**' (केंद्र/मुगल नियंत्रण के अधीन) घोषित कर दिया था।

मोटा राजा उदयसिंह (1583 – 1595 ई.)

- मुगलों की अधीनता स्वीकार करने वाला जोधपुर का पहला शासक।

बीकानेर का राठौड़ राजवंश:

राव बीका (1465 – 1504 ई.)

- जोधपुर संस्थापक **राव जोधा के पुत्र**। (अपने पिता के एक व्यंग्य से प्रभावित होकर इन्होंने मारवाड़ छोड़ दिया)
- बीकानेर राठौड़ राजवंश के संस्थापक
- **बीकानेर की स्थापना (1488 ई.):** 12 अप्रेल **1488 ई.** में **वैशाख शुक्ल तृतीया (आखातीज)** के दिन 'रातीघाटी' स्थान पर **बीकानेर शहर** की नींव रखी। और **'कोडमदेसर'** को अपनी राजधानी बनाया।
- **बिकाजी की टेकरी** नामक एक दुर्ग की नींव रखी थी लेकिन उसे पूर्ण नहीं कर पाए |
- बीकानेर के राठौड़ों की कुलदेवी **करणी माता** (देशनोक) के मूल मंदिर का निर्माण करवाया।
- बीका ने पुंगल के **राव शेखा की पुत्री रंगकंवरी** से विवाह किया था |
- 'कोडमदेसर' में भैरव मंदिर का निर्माण करवाया |

राव लूणकरण (1505 – 1526 ई.)

- **राव बीका के छोटे पुत्र** |
- राव बीका के बड़े पुत्र **राव नरा (1504-05)** की अल्पकाल में मृत्यु के बाद शासक बने |
- **'कलयुग का कर्ण':** दानवीरता के कारण इतिहासकार **बिठू सूजा** ने अपने ग्रंथ **'राव जैतसी रो छंद'** में इन्हें **'कलयुग का कर्ण'** कहा है।
- **जयसोम** ने अपने ग्रन्थ **कर्मचन्द्रवन्शोत्किर्तनक काव्यम** मे इनकी दानशीलता की तुलना कर्ण से की है |
- **निर्माण:** बीकानेर में खारे पानी की **'लूणकरणसर झील'** और लूणकरणसर कस्बे की स्थापना की।
- लूणकरण ने अपनी पुत्री **बालाबाई** का विवाह **आमेर के पृथ्वीराज कछवाहा** के साथ किया |
- **निधन:** 1526 ई. में नारनौल के नवाब के खिलाफ **ढोसी के युद्ध** में लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

राव जैतसी (1526 – 1541 ई.)

- **कामरान पर विजय (1534 ई.):** बाबर के पुत्र और काबुल के शासक **कामरान** ने 1534 ई. मे बीकानेर पर हमला किया, तो राव जैतसी ने कामरान को युद्ध में बुरी तरह पराजित किया | (ये जानकारी **'राव जैतसी रो छंद'** ग्रंथ में मिलती है।)
- **पाहोबा/साहोबा के युद्ध:** 1541 ई. में जोधपुर के राव मालदेव के खिलाफ **पाहोबा/साहोबा के युद्ध** में लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए, **मालदेव की सेना का नेतृत्व कूम्पा महाराजोत व पंचायण ने किया**, युद्ध के बाद जैतसी का पुत्र कल्याणमल राज्य प्राप्ति हेतु शेरशाह की शरण मे चल गया |

राव कल्याणमल (1544 – 1574 ई.)

- **राव जैतसी के पुत्र** |
- कल्याणमल खानवा के युद्ध (1527 ई.)मे राणा सांगा की सेना मे शामिल हुए थे |
- **गिरि-सुमेल युद्ध (1544 ई.):** पिता की मृत्यु का बदला लेने के लिए इन्होंने शेरशाह सूरी की सहायता की और मालदेव के खिलाफ गिरि-सुमेल युद्ध में भाग लिया।
- शेरशाह के युद्ध जीतने के बाद कल्याणमल **1544 ई. मे बीकानेर** पर अधिकार कर शासक बने।
- **मुगल अधीनता (1570 ई.):** अकबर के **नागौर दरबार (1570 ई.)** में उपस्थित होकर मुगलों की अधीनता स्वीकार करने वाले **बीकानेर के प्रथम राठौड़ शासक** बने। और अपनी पुत्री का विवाह अकबर के साथ किया |
- कल्याणमल मुगल अधीनता स्वीकार करने वाले पहले राठौड़ शासक |
- दो पुत्र जिन्हें मुग़ल दरबार मे भेज दिया–
  - **रायसिंह** (बीकानेर के अगले प्रतापी शासक)

जयपुर का कच्छवाह राजवंश

- कच्छावाहा राजपूत स्वयं को भगवान रामचंद्र के पुत्र कुश का वंशज मानते हैं।
- कई इतिहासकारों की ऐसी मान्यता है कि कुश या उसके किसी वंशज ने सोन नदी के तट पर रोहतास नामक दुर्ग का निर्माण कर वहाँ अपना शासन स्थापित किया था।
- परवर्ती काल में उनके वंशज राजा नल ने 295 ई. के आसपास 'नरवर' (या निषध) को अपनी राजधानी बनाया था।
- इन्हीं के वंशजों ने 'ग्वालियर' व 'लाहर' नामक स्थान पर भी अपना शासन स्थापित किया था।
- ढूंढाड के कछवाहा शासक ग्वालियर से यहाँ आये थे और वे नरवर के कछवाहो की एक शाखा थे।
- पीढ़ियों बाद नरवर का शासक सोढासिंह (976-1006 ई.) हुआ, इन्ही के पुत्र दुल्हेराय हुए।

> तथ्य- ग्वालियर के एक सहस्त्र बाहु मंदिर से कछवाहा शासक महिपाल (1093 ई.) के अभिलेख अनुसार लक्ष्मण इस राजवंश के पहले शासक थे, पुत्र वज्रदामन ने ग्वालियर जीता था।

दूल्हेराय / (तेजकरण) : संस्थापक

- सोडासिंह (सोढ़ाराव) के पुत्र दुलहराय का विवाह मौरा (दौसा के पास) के चौहान शासक रालपसी की पुत्री सुजान कँवर से हुआ।
- दौसा प्रदेश में 10वीं सदी में बड़गुर्जरों एवं चौहानों का शासन था।
- दुलहराय ने अपने ससुराल के शासकों की सहायता से तथा अपनी कूटनीति व पराक्रम से दौसा के बड़गुर्जरों को परास्त कर दौसा पर अपना अधिकार कर लिया।
- **ढूँढाड़ में आगमन (1137 ई.):** इन्होंने **1137 ई.** में ढूँढाड़ क्षेत्र (जयपुर के आस-पास का क्षेत्र जो ढूँढ नदी के कारण ढूँढाड़ कहलाया) में कदम रखा और कच्छवाहा राजवंश की नींव रखी।
-

कच्छवाह वंश के शासक क्रम से

- दूल्हे राय (धोला राय) - कछवाहा वंश के संस्थापक
- कोकिलदेव - 1207 ई.
- हनुदेव
- जान्हड़ देव
- पंजवन देव
- मलयसी
- बिजलदेव
- राजदेव
- कीलण देव
- कुंतल
- जणसी
- उदयकरण
- नृसिंह/नरसिंह
- बनबीर
- चंद्रसेन
- पृथ्वीराज कछवाहा(1503–1527
- पूरणमल (1527–1534)
- भीमदेव (1534–1537)
- रतनसिंह (1537–1548)
- भारमल (बिहारिमल)
- भगवंत दास (1574–1589)
- राजा मानसिंह प्रथम (1589–1614)
- राजा भावसिंह (1614–1621)
- मिर्जा राजा जयसिंह (1621–1667)
- रामसिंह प्रथम (1667–1688)
- विशन सिंह (1688–1699)
- सवाई जयसिंह (1699–1743)
- सवाई ईश्वरी सिंह (1743–1750 ई.)
- सवाई माधोसिंह प्रथम (1750–1768
- सवाई पृथ्वीसिंह द्वितीय (1768–1778 ई.)
- सवाई प्रतापसिंह (1778–1803 ई.)
- सवाई जगतसिंह द्वितीय (1803–1818 ई.)
- सवाई जयसिंह तृतीय (1818–1835 ई.)
- सवाई रामसिंह द्वितीय (1835–1880 ई.)
- सवाई माधोसिंह द्वितीय (1880–1922 ई.)
- सवाई मानसिंह द्वितीय (1922–1949 ई.)

❖ **सवाई जयसिंह द्वितीय: (1700 – 1743 ई.)**

कच्छावाहा राजवंश के सबसे महान खगोलशास्त्री, गणितज्ञ, वास्तुविद् और कूटनीतिज्ञ शासक थे। इन्हें **"आधुनिक जयपुर का निर्माता"** और **"चाणक्य"** भी कहा जाता है।

❖ जयसिंह का **मूल नाम विजयसिंह** व इनके छोटे भाई का नाम जयसिंह था, औरंगजेब ने वीरता की तुलना मिर्जा राजा जयसिंह से कर इनका नाम जयसिंह रखा व छोटे भाई का नाम विजयसिंह रख दिया |

❖ जयसिंह द्वितीय ने ही सर्वप्रथम **सवाई** उपाधि का प्रयोग किया |

जयपुर शहर की स्थापना व नगर नियोजन

सवाई जयसिंह ने अपनी पुरानी राजधानी आमेर में पानी की कमी और बढ़ती आबादी को देखते हुए एक नए, सुनियोजित शहर को बसाने का निर्णय लिया।

❖ **स्थापना तिथि: 18 नवंबर, 1727 ई.** को जयपुर (मूल नाम: जयनगर) की नींव रखी गई।

❖ **नींव रखने वाले पुरोहित:** जगन्नाथ सम्राट (सवाई जयसिंह के गुरु) ने

❖ **मुख्य वास्तुकार (Architect):** बंगाल के प्रसिद्ध वास्तुविद् **विद्याधर भट्टाचार्य** थे।

❖ **नगर नियोजन के प्रमुख सिद्धांत:**

- **ग्रिड पैटर्न (Grid Pattern):** जयपुर भारत का पहला सुनियोजित शहर था जो **'ग्रिड पैटर्न'** पर आधारित था, जहाँ मुख्य सड़कें और गलियाँ एक-दूसरे को **90 डिग्री (समकोण)** पर काटती हैं।
- **वास्तु शास्त्र और शिल्प शास्त्र:** इस शहर का निर्माण 'बुद्ध प्रकाश मंडल' के शिल्प शास्त्र और प्राचीन हिंदू वास्तु सिद्धांतों के आधार पर **9 वर्गों (नौ चौकड़ियों)** के सिद्धांत पर किया गया था।
- **सुरक्षा एवं द्वार:** शहर के चारों ओर एक मजबूत परकोटा (दीवार) बनाया गया, जिसमें प्रवेश के लिए **7 मुख्य दरवाजे** (जैसे- अजमेरी गेट, सांगानेरी गेट, घाटगेट, ध्रुव पोल, चाँद पोल, सूरजपोल, नया गेट आदि) रखे गए थे।
- **गुलाबी रंग (Pink City): 1876 ई.** में महाराजा सवाई रामसिंह द्वितीय ने 'प्रिंस ऑफ वेल्स' (एडवर्ड सप्तम) के स्वागत में पूरे शहर को **गेरुए/गुलाबी रंग** से पुतवा दिया था।

वेधशालाएँ (जंतर-मंतर)

सवाई जयसिंह ज्योतिष और नक्षत्र विज्ञान के प्रकांड विद्वान थे। उन्होंने ग्रहों की शुद्ध गति और समय की सटीक गणना के लिए भारत में **5 स्थानों पर वेधशालाएँ** बनवाईं, जिन्हें **'जंतर-मंतर'** (यंत्र-मंत्र का अपभ्रंश) कहा जाता है:

1. दिल्ली की वेधशाला: सबसे प्राचीन (1724 ई.) यह सवाई जयसिंह द्वारा निर्मित **पहली वेधशाला** थी। यह कनॉट प्लेस, दिल्ली में स्थित है।

2. जयपुर की वेधशाला (जन्तर मन्तर): (निर्माण - 1728 ई. मे प्रारंभ व 1734 ई. पूर्ण) |. सभी 5 वेधशालाओं में **सबसे बड़ी और आधुनिक** है। इसमें विश्व की सबसे बड़ी पत्थर की धूपघड़ी **'सम्राट यंत्र'** लगी है , 1 **अगस्त 2010** में जयपुर के जंतर-मंतर को **यूनेस्को (UNESCO) की विश्व धरोहर सूची** में शामिल किया गया था।

3. उज्जैन की वेधशाला: मध्य प्रदेश, क्षिप्रा नदी के तट पर स्थित है। कर्क रेखा इस क्षेत्र के पास से गुजरने के कारण खगोलीय दृष्टि से यह अत्यंत महत्वपूर्ण है।

4. वाराणसी (बनारस) की वेधशाला: उत्तर प्रदेश. गंगा नदी के किनारे मानमहल के शीर्ष पर इसका निर्माण करवाया गया था।

5.मथुरा की वेधशाला: उत्तर प्रदेश, यह वेधशाला मथुरा के किले में बनवाई गई थी, जो वर्तमान में लगभग नष्ट हो चुकी है।

प्रमुख यंत्र (जयपुर जंतर-मंतर के):

12.

अजमेर का चौहान राजवंश

अजयराज चौहान (1105 – 1133 ई.)

- **अजमेर की स्थापना:** इन्होंने **1113 ई.** में **अजयमेरु (अजमेर) शहर** बसाया और इसे अपनी राजधानी बनाया।
- **तारागढ़ दुर्ग (अजयमेरु दुर्ग):** इन्होंने बीठली पहाड़ी पर अजयमेरु दुर्ग बनवाया, जिसे आज 'तारागढ़' या 'राजपूताना की कुंजी' कहा जाता है।
- **सिक्के:** इन्होंने 'श्री अजयदेव' नाम से चांदी के सिक्के चलाए। इनकी रानी **सोमलवती (सोमलेखा)** का नाम भी सिक्कों पर मिलता है, जो राजपूताना के इतिहास में दुर्लभ है।

अर्णोराज / आनाजी (1133 – 1153 ई.)

- **उपाधियाँ**–परम भट्टारक, महाराजाधिराज,परमेश्वर
- पुष्कर मे तुर्कों से संघर्ष के बाद **आनासागर झील** व **वराह मंदिर** का निर्माण करवाया।
- **सांस्कृतिक रक्षक:** इनके दरबार में **देवबोध और धर्मघोष** नामक प्रसिद्ध विद्वान रहते थे।
- मृत्यु- पुत्र जगदेव ने हत्या। (चौहानों का पितृहंता)
- प्रबंध चिंतामणी के अनुसार कुमारपाल व अर्नोराज के मध्य आबू मे युद्ध मे हुआ था।
- चालुक्य शासक सिद्धराज जयसिंह ने अपनी पुत्री **कान्चनदेवी** का विवाह अर्नोराज से करवाया था।

विग्रहराज चतुर्थ / बीसलदेव (1153–1163 ई.)

- **उपनाम:** विद्वानों के आश्रयदाता होने के कारण जयानक ने **'कवि बांधव'** की उपाधि दी।
- इनका काल अजमेर के चौहानों का **"स्वर्णकाल"** कहलाता है।
- विग्रहराज स्वयं ने **'हरकेली'** नामक संस्कृत नाटक लिखा, (शिव-अर्जुन युद्ध का वर्णन)
- **संस्कृत पाठशाला:** इन्होंने अजमेर में एक संस्कृत पाठशाला बनवाई, जिसे बाद में कुतुबुद्दीन ऐबक ने तुड़वाकर 1194 ई. मे **'अढाई दिन का झोंपड़ा'** (मस्जिद) बनवा दिया।
- **निर्माण:** इन्होंने टोंक में बीसलपुर बांध/ बीसलपुर कस्बा और बीसलसर तालाब बनवाया।
- एकादशी के दिन **पशुवध** पर प्रतिबन्ध लगाया।
- दरबारी कवि सोमदेव ने **'ललित विग्रहराज'** लिखा जिसमे इंद्रपुर की राजकुमारी देसल व बीसलदेव के प्रेम प्रसंग का उल्लेख है।
- दरबारी कवि नरपति नाल्ह ने **'बीसलदेव रासो'** की रचना की जिसमे राजमति व बीसलदेव के प्रेम प्रसंग का वर्णन है।
- **दिल्ली पर अधिकार –** दिल्ली के तोमर शासक तंवर को पराजित कर दिल्ली पर अधिकार करने वाले **प्रथम चौहान** शासक।

> - बीसलदेव के बाद पृथ्वीराज द्वितीय (1155-1169 ई)– ने यामिनी वंश के खुशरूशाह को पराजित किया।
> - पृथ्वीराज द्वितीय की निसंतान मृत्यु होने पर अर्नोराज व कंचनदेवी का पुत्र सोमेश्वर शासक बना।
> - सोमेश्वर ने प्रताप लंकेश्वर की उपाधि ग्रहण की।

पृथ्वीराज चौहान तृतीय (1177 – 1192 ई.)

- **जन्म – 1166 ई. मे अहिलपाटल गुजरात मे**
- **उपनाम: राय पिथौरा** (युद्ध में पीठ न दिखाने वाला) और **दल पुंगल** (विश्व विजेता)।
- अंतिम हिन्दू सम्राट भी कहा जाता है -
- घोड़े का नाम – **नाट्यरंभ**
- **प्रारंभिक संघर्ष:** पिता सोमेश्वर की मृत्यु के बाद 11 वर्ष की आयु में शासक बने, **माता कर्पूरी देवी** की सहायता से शासन संभाला।
- इनके प्रधानमन्त्री **कदम्बवास** व सेनाध्यक्ष **भुवनमल्ल** व मंत्री – पद्मनाभ, सोढ, वामन थे।
- सर्वप्रथम चचेरे भाई नागार्जुन के विद्रोह को कुचला व 'भदानकों' का दमन किया।
- **तुमुल का युद्ध (1182 ई.):** महोबा के चंदेल शासक परमार्दिदेव को **तुमुल के युद्ध** में हराया (जिसमें
-

भरतपुर का जाट राजवंश

- मूलत: **सिनसिनी** नामक ग्राम के किसान।
- **उदय का कारण:** औरंगजेब की धार्मिक असहिष्णुता और दमनकारी कर नीतियों के विरुद्ध ब्रज क्षेत्र के जाट किसानों का संगठित विद्रोह।

गोकुला जाट (प्रारंभिक नेतृत्व)

- **विद्रोह (1669 ई.):** इन्होंने तिलपत (हरियाणा) के जमींदार के रूप में औरंगजेब के खिलाफ जाटों के पहले बड़े संगठित विद्रोह का नेतृत्व किया।
- **विशेष:** तिलपत के युद्ध में लड़ते हुए इन्हें बंदी बनाया गया और औरंगजेब के आदेश पर इनका कत्ल कर दिया गया।

राजाराम जाट (सिनसिनी)

- कुछ समय के लिए थून किले से ब्रज ने जाटो का नेतृत्व किया, ब्रज की मृत्यु के बाद राजाराम ने कमान संभाली और छापामार युद्ध नीति अपनाई।

__सिकंदरा की लूट (1688 ई.):__ इन्होंने मुगलों को आर्थिक व मानसिक चोट पहुँचाने के लिए आगरा के पास सिकंदरा में स्थित __अकबर के मकबरे__ को लूटा। इन्होंने अकबर की कब्र खोदकर उसकी अस्थियों को हिंदू रीति-रिवाज से जला दिया था, जिससे औरंगजेब अत्यधिक क्रोधित हुआ था।

चूड़ामन जाट (1695 – 1721 ई.) –

- **जाट शक्ति के वास्तविक संगठक**
- इन्होंने थून (भरतपुर) को अपना केंद्र बनाकर वहां एक मिट्टी के किले का निर्माण करवाया।
- **विशेष:** इन्हें जाट शक्ति को एक सुदृढ़ राजनैतिक रूप में संगठित करने का श्रेय जाता है।
- इनके समय मथुरा का फौजदार कछवाहा विशनसिंह था। (औरंगजेब द्वारा नियुक्त)
- चूड़ामन निष्ठावान होकर बादशाह बहादुरशाह के दरबार मे गया, बहादुरशाह ने उन्हें 2000 मनसब प्रदान किया।
- चूड़ामन ने मुगल सूबेदार को सांभर के युद्ध- 1708 ई. मे राजपूतो को पराजित करने मे सहायता की।
- चुडामन स्वतंत्र राज्य की स्थापना चाहता था उसने पुन: कच्छवाह शासको को चुनौती दे दी।
- बादशाह के आदेशानुसार 1716 ई. मे सवाई जयसिंह ने जाटो पर आक्रमण किया जिसके परिणाम - स्वरुप **वजीर सैयद कुतुबुलमुल्क** के माध्यम से चुडामन ने मुग़ल बादशाह के साथ समझौता किया

बदनसिंह (1722 – 1756 ई.)

- **जाट राजवंश के वास्तविक संस्थापक**
- आमेर के सवाई जयसिंह ने इन्हें **'ब्रजराज'** की उपाधि दी और **डीग** की जागीर प्रदान की।
- बदनसिंह ने जून 1725 ई के समझौते तहत जयसिंह को 83000 रुपये देना स्वीकार कर लिया था।
- **निर्माण कार्य:** इन्होंने डीग को अपनी राजधानी बनाया और वहाँ प्रसिद्ध **डीग के महल** व डीग के किले का निर्माण शुरू करवाया। इन्होंने कुम्हेर, वैर और भरतपुर में भी किलों का निर्माण करवाया।
- **7 जून 1756 ई.** को डीग मे बदनसिंह की मृत्यु।
- गोटलियब की पुस्तक मे **पर्शियन हिस्ट्री ऑफ जाट्स** मे बदनसिंह व जाट राजवंश का वर्णन है।

महाराजा सूरजमल (1756 – 1763 ई.)

- महाराजा सूरजमल जाट राजवंश के सबसे प्रतापी, दूरदर्शी और शक्तिशाली शासक थे।
- **उपाधियां:** इन्हें **'जाटों का प्लेटो'** (सैयद गुलाब नकवी ने) व **'जाट राजवंश का अफलातून'** (बुद्धिमान/योग्य शासक) कहा जाता है।
- एक प्राचीन गढ़ी (वर्तमान भरतपुर किला) को खेमकरण जाट से छीनकर भरतपुर नगर के वास्तविक संस्थापक बने।
- **भरतपुर दुर्ग (लोहागढ़) का निर्माण:** इन्होंने **1733 ई.** में अभेद्य लोहागढ़ दुर्ग (मिट्टी का किला) का निर्माण करवाया, जिसे इतिहास में कोई भी शत्रु (मुगल या अंग्रेज) सीधे बलपूर्वक नहीं जीत सका।

अन्य राजवंश

करौली का यादव वंश

- यहाँ यदुवंशी (यादव वंश) शासकों का राज था जो स्वयं को चंद्रवंशी क्षत्रिय एवं यदुवंशी भगवान श्री कृष्ण के वंशज मानते हैं।
- महाजनपद काल में इस क्षेत्र का कुछ भाग मत्स्य एवं कुछ भाग शूरसेन जनपद का भाग था।

❖ विजयपाल

- 983 ई. के आसपास विजयपाल मथुरा को छोड़कर इस पहाड़ी क्षेत्र में आ बसा तथा उसने 995 ई. में एक दुर्ग 'विजय मंदिर गढ़' का निर्माण करवाया तथा उसे अपनी राजधानी बनाया।
- यही दुर्ग आज बयाना दुर्ग के नाम से जाना जाता है।
- 1046 ई. मे तुर्कों ने आक्रमण कर विजय मंदिर गढ़ पर अधिकार कर दिया।

❖ तिमनपाल/तवनपाल:

- बयाना दुर्ग पर मुस्लिम आक्रमण के 12 वर्ष बाद पुनः आकर बयाना से 23 किमी दूरी पर तिमनगढ़ नया दुर्ग बनवाया।
- धर्मपाल ने अपने शासनकाल में धौलडेरा में जाकर 'धौलगढ़' बनवाया जिसे अब धौलपुर का दुर्ग कहते हैं।

❖ अर्जनपाल:

- मियां मक्खन को पराजित कर मंडरायल का किला अपने अधीन किया, अर्जनपाल ने 1348 ई. के लगभग कल्याणपुर नगर बसाया तथा वहाँ कल्याणपुर जी का मंदिर बनवाया, यही नगर आज करौली के नाम से प्रसिद्ध है।
- इन्होने अंजनि माता का मंदिर व गढ़कोट का दुर्ग भी बनवाया।

❖ गोपालदास:

- मुग़ल अकबर की सेवा में।
- बादशाह ने उसे प्रसन्न होकर **'रणजीत नक्कारा'** दिया था जो अभी करौली राजघराने में मौजूद है।
- गोपालदास ने मांचलपुर के दुर्ग में महलों का निर्माण तथा बहादुरगढ़ का किले का निर्माण करवाया।

❖

❖ धर्मपाल द्वितीय

- सन् 1707 ई. में धर्मपाल द्वितीय ने **करौली को अपनी राजधानी** बनाया।

❖ गोपालपाल

- सन् 1750 के आसपास यहाँ का शासक।
- गोपालपाल ने करौली शहर के चारों ओर लाल पत्थर का परकोटा, गोपाल मंदिर, नया कल्याण मंदिर एवं मदन मोहनजी का मंदिर बनवाया।
- 1753 ई. में गोपालपाल ने मुगल बादशाह मुहम्मदशाह से **'माही मरातिब'** का खिताब दिया।

❖ हरबक्शपाल-1804 ई.

- सन् 1812 में नवाब मुहम्मदशाह खाँ से हरबख्शपाल का मांची का युद्ध हुआ जिसमें इसने नवाब को पराजित किया।
- मराठा नेता सिंधिया द्वारा अपने सेनानायक बैपटिस्ट के नेतृत्व में करौली पर आक्रमण करने पर हरबख्सपाल ने खिराज देकर टाला।
- 9 नवम्बर, 1817 को करौली राज्य ने अंग्रेजों के साथ अधीनस्थ पार्थक्य की संधि कर ली।

❖ मदनपाल(1854-1869 ई.)

- 14 मार्च, 1854 ई. को गद्दी पर बैठे।
- 1857 ई. के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में कोटा पर क्रांतिकारियों का अधिकार हो जाने पर करौली के शासक मदनपाल ने महाराजा कोटा की सहायतार्थ अपनी सेना भेजी थी।
- राजस्थान मे **दयानंद सरस्वती** की पहली यात्रा।
- जयपाल सिंह ने जयनगर नाम का कस्बा बसाया।

❖ भोमपाल:

- 1939 ई. में करौली प्रजामंडल की स्थापना हुई।

❖ गणेशपाल:

- एकीकरण के प्रथम चरण 18 मार्च, 1948 को करौली का मत्स्य संघ में विलय हो गया।

चावड़ा राजवंश :

- जेम्स टॉड ने इन्हें सीथियन जाति का कहा है।

रियासतें व ब्रिटिश संधियाँ

❖ सहायक संधियाँ

- ❖ सहायक संधि का जन्मदाता – लॉर्ड वेलेजली
- ❖ भारत मे प्रथम सहायक संधि 1798 ई. मे हैदराबाद के निजाम के साथ की गई।
- ❖ **राजस्थान पहली संधि:** भरतपुर राज्य के रणजीतसिंह के साथ 29 सितम्बर 1803 ई को लॉर्ड वेलेजली ने सहायक संधि की।
- ❖ **अलवर से संधि-** 14 नवम्बर 1803 ई को शासक बख्तावरसिंह के साथ।
- ❖ **जयपुर से संधि –** 12 दिसम्बर 1803 ई. को महाराजा जगतसिंह द्वितीय के साथ।
- ❖ **जोधपुर से संधि-** 22 दिसम्बर 1803 ई को महाराजा मानसिंह के साथ (संधि की पुष्टि नही हुई)

अधीनस्थ पार्थक्य की नीति (हेस्टिंग्स के समय)

- ❖ राजपूत राज्यों से अंग्रेजो द्वारा संधि किए जाने का मुख्य कारण – मराठा शक्ति के विस्तार पर तथा लूटमार की प्रवृति पर अंकुश लगाना था।
- ❖ संधि का प्रारुप तैयार करने वाला-चार्ल्स मेटकाफ
- ❖ **राजस्थान मे पहली संधि** (करौली)– करौली के शासक हरबक्शपाल ने 9 नवम्बर 1817 ई को।
- ❖ **कोटा से संधि**– विस्तृत व व्यापक संधि 26 दिसम्बर 1817 ई को कोटा के प्रशासक झाला जालिमसिंह ने कोटा की ओर से की।
- ❖ **सबसे अंतिम मे सन्धि करने वाली रियासत**– सिरोही से 11 सितम्बर 1823 ई. को।
- ❖ सभी राज्यों से सन्धियों द्वारा कम्पनी को वार्षिक खिराज स्वीकार किया, ये रियासतें खिराज नहीं देती थी- बीकानेर, जैसलमेर, करौली, किशनगढ़ व अलवर।

संधियों के बाद का घटनाक्रम (वन-लाइनर)

- ❖ 1832 में अजमेर में गवर्नर जनरल का दरबार आयोजित हुआ। मार्च, 1832 में AGG (Agent to Governer General For Rajputana) का कार्यालय अजमेर में स्थापित किया गया। **अब्राहम लॉकेट मार्च, 1832 में राज्य के प्रथम AGG बने।**
- ❖ 1832 में AGG का ऑफिस अजमेर में सर्वप्रथम दौलतबाग में फिर 'फूस का बंगला' में तथा उसके बाद मेयो कॉलेज के दुर्गादास हाउस में रहा। 1857 ई. में ए.जी.जी. कार्यालय माउण्ट आबू स्थानांतरित कर दिया गया।
- ❖ 1864 में AGG को वर्ष में 6-6 माह तक के लिए दोनों मुख्यालय हेतु अधिकृत कर दिया।

❖ **प्रथम AGG**- अब्राहम लॉकेट (मार्च, 1832- 29 नवम्बर, 1833)
❖ अजमेर मेरवाड़ा के **प्रथम चीफ कमिश्नर** - रिचर्ड हर्टे कीटिंग
❖ **अंतिम चीफ कमिश्नर** - हीरानंद रुपचंद शिवदासनी (1 दिसम्बर, 1944 - 14 अगस्त, 1947)
❖ **अंतिम ब्रिटिश चीफ कमिश्नर** - जॉर्ज वॉन बेर्ले गिलन (1 अक्टूबर, 1942 - 1 दिसम्बर, 1944)

" कंपनी सरकार द्वारा 1818 में 'राजपूताना रेजिडेंसी' का गठन कर ब्रिगेडियर जनरल डेविड ऑक्टेरलोनी को 'Resident for Rajputana' बनाया गया। इनका कार्यालय दिल्ली में स्थापित किया गया। इनके अधीनस्थ प्रत्येक रियासत या कुछ रियासतों के ऊपर 'पोलिटिकल एजेंट' या 'रेजीडेंट' कार्यरत थे। "

- ❖ सर डेविड ऑक्टेरलोनी अप्रैल, 1818 में राजपूताना रेजिडेंसी के रेजिडेंट बने।
- ❖ अंग्रेजी सरकार ने राजुताना रेजीडेंसी की रियासतों को **3 रेजीडेंसी व 6 एजेंसी** मे विभाजित किया।
- ❖ अलवर रियासत की स्थापना 1803 ई. में जयपुर रियासत के टुकड़े करके हुई थी।
- ❖ 1806 में धौलपुर के पृथक राज्य की स्थापना सिंधिया की रियासत में से इस क्षेत्र को अलग करके की गई।
- ❖ 1817 में टोंक रियासत की स्थापना जयपुर से।
- ❖ झालावाड़ की की स्थापना कोटा रियासत से।
- ❖ कुशलगढ़ ठिकाने की स्थापना- उदयपुर से।
- ❖ जयपुर में रामसिंह द्वितीय के समय **रूपा बधारण** केस में जाँच हेतु अंग्रेज अधिकारी कर्नल **ऑलविज एवं ब्लेक** आए ब्लेक को जनता ने मार दिया।

राजस्थान में 1857 की क्रांति

- क्रांति के समय संपूर्ण राजपूताना का प्रशासनिक नियंत्रण अंग्रेजों के अधीन था।
- 1857 क्रांति के समय **A.G.G. - जॉर्ज पैट्रिक लॉरेंस**
- **मुख्यालय:** अजमेर (सर्दियों में) और माउंट आबू (गर्मियों में)। क्रांति के समय लॉरेंस माउंट आबू में।

प्रमुख रियासतें और उनके पॉलिटिकल एजेंट

रियासत	पॉलिटिकल एजेंट (P.A.)	तत्कालीन शासक
मेवाड़ (उदयपुर)	मेजर शावर्स (Major Showers)	महाराणा स्वरुप सिंह
मारवाड़ (जोधपुर)	मैक मोसन (Mac Mason)	महाराजा तख्त सिंह
जयपुर	कर्नल ईडन (Colonel Eden)	महाराजा रामसिंह द्वितीय
कोटा	मेजर बर्टन (Major Burton)	महाराव रामसिंह द्वितीय
भरतपुर	मॉरिसन (Morrison)	महाराजा जसवंत सिंह
सिरोही	जे. डी. हॉल (J.D. Hall)	महाराव शिवसिंह

राजस्थान सैनिक छावनियाँ (Military Cantonments)

- क्रांति के समय राजस्थान में कुल **6 सैनिक छावनियाँ** थीं, जिनमें लगभग 5,000 सैनिक थे (कोई भी यूरोपीय सैनिक नहीं था, सभी भारतीय थे)।
- **नसीराबाद (अजमेर):** यहाँ **15वीं बंगाल नेटिव इन्फेंट्री (B.N.I.)** तैनात थी। राजस्थान में क्रांति की शुरुआत यहीं से हुई।
- **नीमच (वर्तमान MP):** यहाँ मालवा-मेवाड़ राजपूताना रेजीमेंट तैनात थी।
- **एरिनपुरा (पाली):** यहाँ जोधपुर लीजन के पूर्विया सैनिक तैनात थे।
- **देवली (टोंक):** यहाँ कोटा कंटिंजेंट के सैनिक तैनात थे।
- **ब्यावर (अजमेर):**यहाँ मेव रेजीमेंट तैनात थी। इन्होंने क्रांति में सक्रिय भाग नहीं लिया।
- **खेरवाड़ा (उदयपुर):** यहाँ भील रेजीमेंट (M.B.C.) तैनात थी। इन्होंने भी विद्रोह में भाग नहीं लिया।

राजस्थान में क्रांति का घटनाक्रम (प्रमुख विद्रोह)

नसीराबाद विद्रोह (28 मई, 1857)

- **प्रारंभ तिथि: 28 मई, 1857** (राजस्थान में क्रांति का श्रीगणेश)।
- **नेतृत्वकर्ता:** 15वीं बंगाल नेटिव इन्फेंट्री के सैनिकों द्वारा।
- **मुख्य घटना:** 30 मई को 30वीं नेटिव इन्फेंट्री सैनिकों ने न्यूबरी और स्पोटिसवुड नामक अंग्रेज अधिकारियों की हत्या कर दी और दिल्ली की ओर कूच कर गए, 18 जून को पहुचें।

नीमच का विद्रोह (3 जून, 1857)

- **नेतृत्वकर्ता: मोहम्मद अली बेग** और **हीरासिंह**।
- **डूंगला की घटना:** नीमच से भागे 40 अंग्रेज परिवारों ने चित्तौड़गढ़ के 'डूंगला' गांव में रूघाराम जाट के घर शरण ली। मेवाड़ के महाराणा स्वरुप सिंह ने मेजर शावर्स की सहायता से इन्हें छुड़ाया और उदयपुर के **जग मंदिर** में शरण दी।
- नीमच छावनी के कप्तान मेकडोनाल्ड ने किले की रक्षा का असफल प्रयास किया।
- **अजमेर जेल मे विद्रोह-** 9 अगस्त 1857 ई को अजमेर मे केन्द्रीय कारागृह मे कैदियों ने विद्रोह कर वहां से 50 कैदी भाग निकले।

एरिनपुरा / आउवा का विद्रोह (21 अगस्त, 1857)

- सबसे शक्तिशाली व प्रमुख केंद्र।
- **नारा:** एरिनपुरा के सैनिकों ने **"चलो दिल्ली, मारो फिरंगी"** का नारा दिया था।
- 1835 ई मे गठित जोधपुर लिजियन का केंद्र एरिनपुरा

राजस्थान के किसान व जनजातीय आंदोलन

- राजस्थान के इतिहास में **किसान आंदोलन** एक अत्यंत महत्वपूर्ण और गौरवशाली अध्याय हैं। जागीरदारों और राजाओं द्वारा किसानों पर लगाए गए अत्यधिक करों (लाग-बाग), बेगार प्रथा और अत्याचारों के विरोध में ये आंदोलन हुए।।

बिजौलिया किसान आंदोलन (1897 – 1941 ई.)

- यह आंदोलन 1897 से 1941 ई. तक कुल 44 वर्षों तक चला, जो भारत का सबसे लंबा अहिंसात्मक आंदोलन था।
- भौगोलिक स्थिति: बिजौलिया (भीलवाड़ा) में स्थित तत्कालीन मेवाड़ रियासत का **'प्रथम श्रेणी'** का ठिकाना था।
- प्रमुख जाति: इस आंदोलन में मुख्य रूप से **धाकड़ जाति** के किसानों ने भाग लिया था।
- यह आंदोलन **तीन चरणों** में चला:

प्रथम चरण (1897 - 1915 ई.):

- नेतृत्व **साधु सीताराम दास** ने किया।
- शुरुआत (1897 ई.): आंदोलन की शुरुआत साधु सीताराम दास के नेतृत्व मे गिरधारीपुरा गाँव में गंगाराम धाकड़ के पिता के मृत्यु भोज पर एकत्रित किसानों की सभा से हुई।
- किसानों पर कुल 84 प्रकार के कर लाग लगाने के कारण किसानों की शिकायत लेकर नानजी पटेल और ठाकरी पटेल मेवाड़ के महाराणा फतेह सिंह के पास गए।
- 1903 ई. में कृष्ण सिंह ने **'चँवरी कर'** (लड़की की शादी पर ₹5/13 का कर) लगा दिया।
- 1906 ई. में नए ठिकानेदार पृथ्वी सिंह ने **'तलवार बंधाई कर'** (उत्तराधिकार शुल्क) लगा दिया, जिसका किसानों ने भारी विरोध किया।
- साधु सीताराम, फतहकरण चारण व ब्रह्मदेव के नेतृत्व मे किसानो ने विरोध किया।
- 1914 मे कृष्णसिंह की मृत्यु होने पर उनका अल्पवयस्क पुत्र केसरीसिंह गद्दी पर बैठा और अंग्रेजी सरकार ने अमरसिंह राणावत को प्रशासक व डूंगरसिंह को नायब बनाया।

बेंगूं किसान आंदोलन (1921 – 1925 ई.)

- बेंगूं ठिकाना तत्कालीन मेवाड़ रियासत (वर्तमान चित्तौड़गढ़ जिला) के अंतर्गत आता था।
- **नेतृत्वकर्ता:** विजय सिंह पथिक के कहने पर **रामनारायण चौधरी** ने इसका नेतृत्व किया।
- 1921 मे मंडावरी नामक गाँव मे किसान सम्मेलन पर गोलिया चलाई गई।
- **बोल्शेविक समझौता:** 1922 में बेंगूं के ठाकुर अनूप सिंह और किसानों के बीच एक समझौता हुआ, जिसे मेवाड़ सरकार ने मानने से इनकार कर दिया और इसे **'बोल्शेविक समझौते'** की संज्ञा दी।
- **गोविंदपुरा हत्याकांड (13 जुलाई, 1923):** अंग्रेज अधिकारी ट्रेंच व लाला अमृतलाल ने किसानों की सभा पर गोलियां चलवा दी, जिसमें **रूपाजी और कृपाजी धाकड़** नामक किसान शहीद हो गए।
- **जांच आयोग:** इस आंदोलन की जांच के लिए **'ट्रेंच आयोग'** का गठन किया गया था।
- अंत समय मे विजयसिंह पथिक ने बेंगु का नेतृत्व किया लेकिन इन्हें **10 सितम्बर 1923** ई. को गिरफ्तार कर दिया।
- दिसम्बर 1923 ई मे लगन की दरे निश्चित की गई।

बूंदी (बरड़) किसान आंदोलन (1922 – 1945 ई.)

यह आंदोलन बूंदी रियासत के 'बरड़' क्षेत्र में हुआ, जहाँ मुख्य रूप से **गुर्जर जाति** के किसान थे।

- **नेतृत्वकर्ता: पंडित नयनूराम शर्मा** (हाड़ौती सेवा संघ के संस्थापक)।
- **डाबी हत्याकांड (2 अप्रैल, 1923):** डाबी स्थान पर किसानों की सभा पर **इकराम हुसैन** नामक पुलिस अधिकारी ने गोलियां चलवा दीं। इसमें **नानक जी भील** और **देवीलाल गुर्जर** शहीद हो गए। नानक जी भील सभा में **'झंडा गीत'** गा रहे थे।
- 5 अक्टूबर 1936 ई. को हिंडोली के **हुडेश्वर महादेव** मंदिर पर 500 किसानो द्वारा एक पत्र तैयार कर सरकार को सौंपा, सरकार ने मांगो को नही समझा

राजस्थान में सामाजिक प्रभाव व प्रमुख प्रथाएँ

- राजपूताना की विभिन्न रियासतों ने ब्रिटिश सरकार (पॉलिटिकल एजेंट्स) के दबाव और आंतरिक सुधारों के कारण इन प्रथाओं को गैर-कानूनी घोषित किया।

सती प्रथा (Sati Pradhan)

- राजस्थान में सती प्रथा का प्रथम लिखित प्रमाण **861 ई. के घटियाला शिलालेख (जोधपुर)** से मिलता है (राणुका की पत्नी संपलदेवी सती हुई थीं)।
- सर्वप्रथम सती प्रथा पर रोक लगाने का प्रयास – महाराजा सवाई जयसिंह ने किया था।
- **सर्वप्रथम रोक: बूंदी रियासत (1822 ई.)** में राव राजा बिशन सिंह के समय इस पर सबसे पहले प्रतिबंध लगाया गया।
- राजा राममोहन राय के प्रयासों से लॉर्ड विलियम बैंटिक ने **1829 ई. में सती प्रथा निषेध अधिनियम** पारित किया। इसके बाद 1830 ई. में अलवर रियासत ने इस पर रोक लगाई।
- *काली घटना*: राजस्थान की अंतिम सती घटना **1987 ई. में देवराला (सीकर)** में 'रूपकंवर' की थी, जिसके बाद राजस्थान सरकार ने कड़ा कानून बनाया।
- सती प्रथा पर रोक लगाने वाले शासक बीकानेर मे सूरतसिंह (1825 ई.), अलवर मे बन्नेसिंह (1830 ई.), जयपुर मे रामसिंह द्वितीय (1844 ई.), बाँसवाड़ा मे लक्ष्मणसिंह (1846 ई.), प्रतापगढ़ मे गणपतसिंह (1846 ई), कोटा मे रामसिंह (1848 ई.), जोधपुर मे तख्तसिंह (1848 ई.), उदयपुर मे स्वरूपसिंह (1861 ई.)

कन्या वध (Female Infanticide)

- **सर्वप्रथम रोक:** पॉलिटिकल एजेंट विल्किंसन के प्रयासों से **कोटा रियासत (1833 ई.)** में महाराव रामसिंह के समय सर्वप्रथम गैरक़ानूनी घोषित।
- **1837 बीकानेर मे, 1839 जोधपुर मे व 1844 मे उदयपुर** मे गैरक़ानूनी घोषित किया गया।

डाकन प्रथा (Witch Hunting)

- **विवरण:** ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को तांत्रिक क्रियाओं या 'डाकन' (डायन) कहकर प्रताड़ित करना या मार देना।
- **सर्वप्रथम रोक: मेवाड़ (उदयपुर) रियासत (April 1853 ई.)** में खैरवाड़ा में महाराणा स्वरूप सिंह के समय गैर क़ानूनी घोषित, **मेवाड़ भील कोर** के कमांडिंग **कैप्टन जे.सी. ब्रुक** के सहयोग से।

बाल विवाह (Child Marriage)

- **सर्वप्रथम रोक: जोधपुर रियासत (1885 ई.)** में प्रधानमंत्री **सर प्रताप सिंह** के प्रयासों से बाल विवाह प्रतिबंधक नियम बनाए गए।
- बालविवाह पर 10 दिसम्बर 1903 ई. को अलवर ने विवाह निषेध कानून बनाए।
- **राष्ट्रीय स्तर पर:** अजमेर के **हरविलास शारदा** के प्रयासों से 1929 ई. में **'शारदा एक्ट'** पास हुआ, जो 1 अप्रैल 1930 को लागू हुआ। (लड़का लडकी आयु क्रमश: 18 वर्ष व 14 वर्ष)

दास प्रथा (Slavery)

- मनुष्यों को खरीदना-बेचना (दास) और बिना पारिश्रमिक के जबरन काम कराना (बेगार)
- **सर्वप्रथम रोक: बूंदी मे महाराव विष्णुसिंह के समय व कोटा मे किशोरसिंह के समय 1832 ई.** में दास प्रथा पर रोक लगाई गई।
- (लॉर्ड विलियम बैंटिक ने चार्टर एक्ट 1833 से इसे पूरे भारत में प्रतिबंधित किया था)।

त्याग प्रथा:

- राजपूत जाति में विवाह के अवसर पर कुछ जातियों के लोगों द्वारा मुंहमांगी रकम (त्याग) मांगने की प्रथा। अत्यधिक खर्च के कारण लोग कन्या वध करने लगे थ

राजस्थान में पुनर्जागरण

प्रमुख राजनैतिक संस्थाएं :

राजस्थान सेवा संघ (1919 ई.)

- **स्थापना: 1919 ई.** में **वर्धा (महाराष्ट्र)** में महात्मा गांधी की प्रेरणा से।
- **संस्थापक: विजय सिंह पथिक** (मुख्य सूत्रधार), रामनारायण चौधरी, हरिभाई किंकर
- **ध्येय –** जान के खौफ से कर्तव्य से न हटूंगा कभी , काम रह जाएगा , जान रहे ना रहे।
- **उद्धेश्य –** जागीरदारों व जनता मे मैत्री सम्बद्ध हो।
- **अक्टूबर 1920 ई.**- मुख्यालय अजमेर स्थान्तरित।
- **समाचार पत्र:** वर्धा से **'राजस्थान केसरी'** तथा अजमेर से **'नवीन राजस्थान'** (बाद में नाम बदलकर **'तरुण राजस्थान'**) का संपादन इसी संघ द्वारा किया गया।
- **योगदान:** इस संघ ने बिजौलिया और बेगू किसान आंदोलनों का खुलकर समर्थन व नेतृत्व किया।
- पथिकजी(1924) के गिरफ्तार होने के बाद 1926-27 मे राजस्थान सेवा संघ का प्रभाव कम हो गया।
- **आजीवन सदस्य–**विजयसिंह पथिक,माणिक्यलाल वर्मा,रामनारायण चौधरी, अंजनादेवी चौधरी, शोभालाल गुप्ता, हरिभाई किंकर, नयनूराम शर्मा, लादूराम जोशी, कुं मदनसिंह।

राजपूताना मध्य भारत सभा (1918 ई.)

- इसका मुख्य उद्देश्य देसी रियासतों की जनता को कांग्रेस के आंदोलनों से जोड़ना था।
- **उद्देश्य –** राज्यों की प्रजा की दुर्दशा की ओर कांग्रेस का ध्यान आकर्षित करना
- **स्थापना: 1918 ई.** में दिल्ली के चांदनी चौक स्थित **मारवाड़ी पुस्तकालय** में , **मुख्यालय:** अजमेर रखा।
- जमनालाल बजाज **(प्रथम अध्यक्ष),** चांदकरण सारदा (उपाध्यक्ष), विजय सिंह पथिक, गणेशशंकर विद्यार्थी और स्वामी नरसिंहदेव सरस्वती, केसरी सिंह बारहठ, अर्जुनलाल सेठी।

1. **प्रथम अधिवेशन** (1918 ई.): दिल्ली में (अध्यक्ष: जमनालाल बजाज)।
2. **द्वितीय अधिवेशन** (दिसम्बर, 1919 ई.): अमृतसर (पंजाब) में, अध्यक्ष- J.L. नेहरु।
3. **तृतीय अधिवेशन** (मार्च, 1920 ई.): अजमेर में (अध्यक्ष: जमनालाल बजाज)। इसमें तय हुआ कि इसका मुख्यालय अजमेर रहेगा।
4. **चतुर्थ अधिवेशन** (दिसम्बर, 1920 ई.): नागपुर में। इसके दो हिस्से हुए; नागपुर में अध्यक्ष **नरसिंह चिंतामणि केलकर** चुने गए, लेकिन वे उपस्थित नहीं हो सके, तो अध्यक्षता **गणेश नारायण सोमाणी** ने की। बाद मे कांग्रेस की ही सहयोगी संस्था ही बन गई थी।

मित्र मंडल बिजौलिया (1907 ई.)

- **संस्थापक: साधु सीताराम दास**।
- **विवरण:** बिजौलिया के किसानों को संगठित करने और जागीरदारों के अत्याचारों के खिलाफ जागृत करने के लिए स्थापित संगठन था।

वीर भारत सभा (1910 ई.)

- **स्थापना: 1910 ई.** में **कोटा** में।
- **संस्थापक:** ठाकुर केसरीसिंह बारहट
- **उद्देश्य:** यह एक **गुप्त क्रांतिकारी संगठन** था, जो क्रन्तिकारी गतिविधियों के प्रसार हेतु कार्यरत था।

विद्या प्रचारिणी सभा (1911 ई.)

- **स्थापना: 1911 ई.** को, **चित्तोडगढ** में।
- **संस्थापक:** हरिभाई किंकर।
- **विशेष:** चित्तौड़गढ़ के 'ओछड़ी' गाँव में भी इसकी एक शाखा थी। 1915 ई. में विजय सिंह पथिक जब अपनी

राजस्थान में प्रजामण्डल आन्दोलन

राजस्थान में **प्रजामंडल आंदोलनों** का इतिहास स्वतंत्रता संग्राम और रियासती दमन के विरुद्ध जन-जागृति का सबसे स्वर्णिम अध्याय है।

- इसका मुख्य उद्देश्य रियासतों में शासको के संरक्षण में **'उत्तरदायी शासन'** की स्थापना करना और सामंती अत्याचारों व लाग-बाग (करों) को समाप्त करना था।
- 1 अगस्त 1920 से महात्मा गांधी ने असहयोग आंदोलन प्रारम्भ किया।
- असहयोग आंदोलन का प्रभाव राजस्थान पर भी पड़ा।
- जोधपुर में भँवरलाल सर्राफ तिरंगा झंडा लेकर शहर में घूमे, भँवरलाल सर्राफ के झंडे पर एक ओर महात्मा गांधी तथा दूसरी ओर 'स्वराज्य' लिखा था।
- ब्रिटिश सरकार को जमनालाल बजाज ने **'रायबहादुर'** की उपाधि लौटा दी।
- 1921 में बीकानेर में मुक्ताप्रसाद वकील आदि ने विदेशी कपड़ों की होली जलाई, खादी पहनने का संकल्प लिया गया।
- मोतीलाल नेहरू उपस्थिति मे 15 मार्च 1921 को अजमेर में द्वितीय राजनीतिक सम्मेलन आयोजित हुआ, सम्मेलन की अध्यक्षता मौलाना शौकत अली ने की।
- अजमेर में पंडित गौरीशंकर के नेतृत्व में विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार हुआ।
- स्वदेशी वस्त्र पहनने के कारण महाराजा गंगासिंह ने शिवपूर्ण सिंह, सम्पूर्णानन्द एवं आनन्द वर्मा को निलंबित कर दिया।
- सर प्रतापसिंह पहले महर्षि दयानंद के उपदेशों से प्रभावित होकर हिन्दी व स्वदेशी का प्रचार करते थे।
- **अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद** की स्थापना **1927 ई. में बम्बई** में हुई थी (दीवान बहादुर रामचंद्र राव की अध्यक्षता में)। इसका मुख्य उद्देश्य रियासतों में जन-आंदोलनों को दिशा देना था।
-

जयपुर प्रजामंडल (1931 ई.)

- **प्रजामंडल का गठन :** कपूरचंद पाटनी (अध्यक्ष) व जमनालाल बजाज के द्वारा।
- **पुनर्गठन (1936-37):**जयपुर के चिंरजीलाल मिश्र (अध्यक्ष), हीरालाल शास्त्री (महामंत्री),कर्पुर चंद पाटनी (संयुक्त मंत्री)
- **प्रथम अधिवेशन** (नथमल का कटला में)- **8-9 मई 1938** जमनालाल बजाज की अध्यक्षता मे , इसमें कस्तूरबा गाँधी ने भाग लिया था।
- जयपुर सत्याग्रह(1939 ई.) मे भाग लेने वाली महिलाए- रमादेवी देशपांडे (नेतृत्वकती), सुमित्रा देवी, विद्यादेवी,इन्द्रादेवी,सुशीला गोयल, शारदा देवी
- हीरालाल शास्त्री की घोषणा पर **12 मार्च 1939** के दिन **जयपुर दिवस** मनाया गया।
- प्रजामंडल का दूसरा अधिवेशन – 25/26 मई 1940 ई. को (सभापति जमनालाल बजाज),
- **<u>जेंटलमेंस एग्रीमेंट</u> (1942 ई.)**: **हीरालाल शास्त्री** और जयपुर के प्रधानमंत्री **मिर्जा इस्माइल** के बीच। जिसमे ये **शर्तें:** प्रजामंडल 'भारत छोड़ो आंदोलन' (1942) में भाग नहीं लेगा, जिसके परिणामस्वरूप

- **<u>आजाद मोर्चा (1942 ई.)</u>**
- जेंटलमैन एग्रीमेंट के विरोध में 'आजाद मोर्चा' का गठन **बाबा हरिश्चन्द्र द्वारा**।
- अन्य कार्यकर्ता- रामकरण जोशी, दौलतमल भंडारी, हंसमुखलाल, गुलाबचन्द कासलीवाल, चंद्रशेखर शर्मा, राधेश्याम शर्मा, ओमदत्त शास्त्री, मदनलाल खेतान, चिरंजीलाल मिश्र, मुक्तिलाल मोदी, विजयचंद जैन, अलाबक्ष चौहान, मास्टर आनन्दीलाल, मोहनलाल आजाद, गोपाल वैद्य।
- **कार्य:** आजाद मोर्चे ने जयपुर में 'भारत छोड़ो आंदोलन' का संचालन किया।
- 1945 में JL नेहरूजी के प्रयासों से आजाद मोर्चा का पुन: जयपुर प्रजामंडल में विलय।

राजस्थान का एकीकरण

- **रियासती विभाग:** 5 जुलाई 1947 को भारत सरकार ने 'रियासती विभाग' का गठन किया।
- **प्रमुख:** सरदार वल्लभभाई पटेल (अध्यक्ष) और वी.पी. मेनन (सचिव)।
- **संधि की मुख्य शर्त:** कोई भी रियासत स्वतंत्र रहने के लिए ये शर्तें पूरी करती हो:
- जनसंख्या 10 लाख से अधिक हो
- वार्षिक आय 1 करोड़ रुपये से अधिक हो।
- ऐसी रियासतें राजस्थान में केवल चार थीं: **जयपुर, जोधपुर, बीकानेर और उदयपुर।**

- **इंस्ट्रूमेंट ऑफ एक्सन –**

- उन रियासतों को हस्ताक्षर करने थे जो भारत देश मे मिलना चाहते थे |
- सर्वप्रथम 7 अगस्त 1947 ई. को बीकानेर महाराजा सार्दुलसिंह ने हस्ताक्षर किए |
- सबसे अंत मे 14 अगस्त 1947 को धौलपुर के शासक उदयभानसिंह ने हस्ताक्षर किए |
- सरदार पटेल के अनुरोध पर जोधपुर शासक हनुमंतसिंह ने 9 अगस्त 1947 ई. को अधिमिलन पत्र पर हस्ताक्षर किए |
- सम्मिलन पत्र पर हस्ताक्षर के प्रति असमंजस की स्थिति वाली रियासतें-**धौलपुर,जोधपुर**

- राजस्थान का एकीकरण- कुल 7 चरणों मे |
- एकीकरण मे लगा समय–17 मार्च 1948 से 1 नवम्बर 1956 तक (8 वर्ष 7 माह 14 दिन)
- कुल रियासते – 19
- कुल ठिकाने – 3 कुशलगढ़(बाँसवाड़ा), नीमराणा(अलवर), लावां(टोंक)
- राज्य व कमिश्नर को तीन श्रेणियों मे विभाजित किया गया था जो इस प्रकार है |
  A श्रेणी – गवर्नर , B श्रेणी - राजप्रमुख
  C श्रेणी -चीफ कमिश्नर
- राजस्थान **B श्रेणी** का राज्य था |
  - **अजमेर मेरवाड़ा कमिश्नरेट–**
- C श्रेणी का चीफ कमिश्नरेट

- इसकी विधानसभा, धारा सभा कहलाती थी जिसमे 30 सदस्य थे |
- मुख्यमंत्री – हरिभाऊ उपाध्याय |
- सबसे प्राचीन रियासत – मेवाड़
- सबसे नवीन रियासत – झालावाड़
- सबसे बड़ी रियासत – मारवाड़
- सबसे छोटी रियासत – शाहपुरा

1946 में संविधान सभा में -
राजस्थान से मनोनीत सदस्य:

1. हीरालाल शास्त्री – जयपुर
2. सरदार सिंह – खेतड़ी
3. राजबहादुर – भरतपुर
4. बलवंत सिंह मेहता – उदयपुर
5. माणिक्यलाल वर्मा – उदयपुर
6. जयनारायण व्यास – जोधपुर
7. मुकुटबिहारी भार्गव - अजमेर-मेरवाड़ा
8. जसवंत सिंह – बीकानेर
9. गोकुल लाल असावा - शाहपुरा (भीलवाड़ा)
10. दलेल सिंह – कोटा
11. रामचन्द्र उपाध्याय - अलवर

....

संविधान सभा के वे सदस्य, जो राजस्थान में प्रशासनिक अधिकारी भी थे -

1. वी.टी. कृष्णामाचारी – जयपुर
2. सी.एस. वेंकटाचारी – जोधपुर
3. टी. विजयराघवाचार्य – उदयपुर
4. के.एम. पनीकर - बीकानेर

- बीकानेर शासक लुहारू राज्य को अपने राज्य मे मिलाने के लिए प्रयासरत थे, जून 1947 ई मे लुहारू नवाब ने प्रशासनिक समझौता भी किया था लेकिन ब्रिटिश सरकार ने इसका प्रबंध अपने हाथ मे ले लिया था

25.

प्रमुख ऐतिहासिक व्यक्तित्व

❖ अखैराज देवड़ा (प्रथम)
- सिरोही का शासक (1523-1533)।
- यह उडणा अखैराज के नाम से प्रसिद्ध था।
- महाराणा सांगा की ओर से खानवा के युद्ध में लड़े।

❖ अखैराज सोनगरा
- पाली का जागीरदार जो अपने समय का बड़ा नीतिकुशल योद्धा था।
- मारवाड़ में यह **'रोटेराव'** के नाम से प्रसिद्ध है।

❖ अचलदास खींची
- गागरोण का शासक जो महाराणा मोकल का जामाता था। सन् 1423 में मालवा के सुल्तान होशंगशाह से लड़ता हुआ गागरोण में मृत्यु हुई।

❖ अचलेश्वरप्रसाद शर्मा
- 1907 में जन्म- जोधपुर !
- बिजौलिया आन्दोलन में सक्रिय भाग।
- साप्ताहिक पत्र 'प्रजा सेवक' के संस्थापक/सम्पादक।

❖ अज्जा झाला
- बड़ी सादड़ी के जागीदार का पूर्वज जो हलवद (काठियावाड़) से मेवाड़ आया।
- 1527 के खानवा युद्ध में भाग लिया व वीरगति।

❖ अजयराज चौहान (प्रथम)
- शाकम्भरी शासक (1113-1133)।
- अजमेर शहर की स्थापना सन् 1113 में।
- मालवा के शासक नरवर्मन को पराजित किया। सोमलदेवी रानी के नाम से सिक्के जारी किये।

❖ राव अनुपसिंह
- 1669 से 1698 तक बीकानेर का महाराजा रहा।
- औरंगजेब ने इन्हें **'माही मरातिव'** की उपाधि दी थी
- स्वयं विद्वान व विद्वानों का आश्रयदाता था।

❖ अभित्र हरि
- कोटा (हाड़ौती क्षेत्र) के स्वतंत्रता सेनानी व प्रजामंडल के मुख्य सदस्य। भारतीय देशीय राज्य प्रजा परिषद की स्थापना-दिल्ली मे

❖ आदित्येन्द्र नाथ (मास्टर)
- जन्म 1907 में भरतपुर के धून गाँव में
- सन् 1954 से 1960 तक राज्यसभा के सदस्य रहे।
- सन् 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान गिरफ्तार।

❖ महारावल लक्ष्मणसिंह –
- डूंगरपुर के शासक (1918 से 1948 ई.)।
- राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष भी बने।

❖ सवाई जयसिंह
- आमेर के शासक **1727 ई.** में जयपुर शहर बसाया।(विद्याधर भट्टाचार्य के सहयोग से)
- इन्होंने पाँच वेधशालाएं -जयपुर, उज्जैन, दिल्ली, बनारस एवं मथुरा (जन्तर-मन्तर) बनवाये।
- जयपुर में सिटी पैलेस (चन्द्रमहल) का निर्माण।
- **हुरडा सम्मेलन** – मराठो के विरुद्ध जयसिंह के प्रयासों से 17 जुलाई, 1734 को राजपूत राजाओं का सम्मेलन।
- **'जीज मोहम्मदशाही'** -1725 ई. में नक्षत्रों की शुद्ध सारणी बनवायी।
- इनका ज्योतिष ग्रंथ- 'जयसिंह कारिका'।
- अश्वमेध यज्ञ कराने वाले - अंतिम हिंदू नरेश
- वाजपेय, राजसूय, पुरुषमेध यज्ञ आयोजित
- 1714 ई. में वृन्दावन से गोविन्ददेवजी मूर्ती की स्थापना ,राज्य में गौड़ीय संप्रदाय की पहली पीठ।
- 1734 ई. में **नाहरगढ़ /सुदर्शनगढ़** किले का निर्माण
- जयगढ़ में **जयबाण** तोप का निर्माण।

❖ आनन्दराज सुराणा
- जोधपुर के प्रसिद्ध स्वतंत्रता सैनानी
- 'मारवाड़ हितकारिणी सभा' द्वारा जन-आंदोलन चलाया।
- गिरफ्तार किये जाने पर विशेष अदालत द्वारा 5 वर्ष के लिए बन्दी बनाये गये।

❖ महाराणा उदयसिंह द्वितीय
- पिता – महाराणा सांगा
- राजगद्दी-1536 में विक्रमादित्य के बाद
- उदयपुर की स्थापना - 1559 में

राजस्थान में नारियों का योगदान :

❖ **गुलाबराय :**

❖ जोधपुर के महाराजा विजयसिंह की पासवान ('जोधपुर की नूरजहाँ')

❖ जोधपुर में बने गुलाब सागर व महिला बाग़ का झालर का निर्माण – 1776 ई मे

❖ **गुमान कुँवरी :**

❖ डूंगरपुर के महारावल जसवंत सिंह की राठौड़ रानी,

❖ डूंगरपुर की केला बावड़ी का निर्माण ।

❖ **पन्ना धायः**

❖ स्वामिभक्त पन्नाधाय ने 1536 ई. में अपने पुत्र को उदयपुर के राजकुँवर उदयसिंह के स्थान पर सुलाकर बनवीर के हाथों मरवा कर उदयसिंह को बचा लिया। वे उदयसिंह को लेकर देवलिया (प्रतापगढ़) चली गई।

❖ **कालीबाई :**

❖ 13 वर्षीय भील बालिका जिसे डूंगरपुर के रास्तापाल ग्राम की पाठशाला में अपने अध्यापक श्री सेंगाभाई को छुड़ाने के प्रयास में रियासती सैनिकों ने गोलियों चला दी..

❖ 19 जून, 1947 ई. को उसकी मृत्यु हो गई।

❖ **श्रीमती जानकी देवी बजाजः**

❖ सेठ जमनालाल बजाज की धर्मपत्नी व सेठ गिरधारीलाल जाजोदिया की पुत्री

❖ जन्म-7 /1/1893 ई. को जावरा (म.प्र.) में।

❖ नारी जागरण, खादी पहनना, प्राकृतिक चिकित्सा, गौसेवा, कुओं का निर्माण, गौ सेवा, भूदान यज्ञ आदि महत्वपूर्ण कार्य !

❖ भारत सरकार ने 1956 ई. में पद्म विभूषण

❖ पद्म विभूषण प्राप्त - राजस्थान की प्रथम महिला व प्रथम व्यक्तित्व ।

❖ निधन- 21 मार्च, 1979 ई. को वर्धा में ।

❖ **श्रीमती किशोरी देवीः**

❖ शेखावाटी के लौह पुरुष सरदार हरलाल सिंह की धर्मपत्नी ।

❖ कटराथल सम्मेलन की अध्यक्षता- सीहोट के ठाकुर द्वारा महिलाओं के साथ किए गए दुर्व्यवहार के विरोध मे **25 अप्रैल, 1934 ई. को कटराथल** में हुए एक विशाल महिला सम्मेलन में 10000 जाट महिलाओं ने भाग लिया।

❖ श्रीमती किशोरी देवी ने अपने गाँव हनुमानपुरा और झुंझुनूं में स्त्री शिक्षा की सार्थक शुरुआत की।

❖ **रतन शास्त्री :**

❖ बालिकाओं की शिक्षा के लिए वनस्थली विद्यापीठ की स्थापना की।

❖ राजस्थान की प्रथम महिला थीं, जिसे भारत सरकार द्वारा 1955 ई. में पद्मश्री सम्मान |

❖ 1975 ई. में पद्मविभूषण के सम्मान से अलंकृत |

❖ **सुजा कँवर राजपुरोहित(नागौर)**

❖ 1857 ई. की क्रांति में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की तरह लड़ी , उनका नाम था-लाडनूं की सुजा।

❖ 1857 ई. में एक अंग्रेज सैनिक टुकड़ी ने लाडनूं क्षेत्र में अचानक आक्रमण कर दिया तो सूजा कंवर ने राज्य की रक्षा की |

❖ 20 वर्षीय सुजा राजपुरोहित जब अंग्रेजों के विरुद्ध अपने शौर्य का परचम लहराकर अपने सैनिकों के साथ जयघोष करते हुए युद्ध में विजय प्राप्त कर लौटी तो लाडनूं के ठाकुर ने उन्हें राजस्थानी पाग (पगड़ी) पहनाकर और तलवार भेंटकर सम्मानित किया और उन्हें सुजा के स्थान पर **वीर सुजानसिंह राजपुरोहित** का नया नाम दिया।

❖ **जानकी देवी बजाज :**

❖ जन्म-लक्ष्मणगढ़ के सेठ गिरधारी लाल के यहाँ 1893 ई. में मध्यप्रदेश के जावरा कस्बे में हुआ |

❖ 1902 में जमालनाल बजाज के साथ का विवाह |

❖ जयपुर प्रजामण्डल के 1944 ई. के अधिवेशन की अध्यक्षा चुनी गई। विनोबा भावे के भूदान आन्दोलन के दौरान 108 कुओं का निर्माण करवाया।

❖ 1956 ई. में इन्हें 'पद्म विभूषण' से सम्मानित किया।

❖ **नारायणी देवी वर्मा :**

❖ जन्म 1902 ई. में सिंगोली (मध्य प्रदेश) में हुआ। इनका विवाह माणिक्यलाल वर्मा से हुआ।

❖ बिजौलिया आन्दोलन के समय इन्हें कुम्भलगढ़ के किले में बन्दी बना लिया गया। 1942 ई. वे अपने पुत्र व चारों पुत्रियों के साथ जेल गयी।

28. सुपर सोनिक डोज (परीक्षा उपयोगी)

सुपर सोनिक डोज : प्रमुख ऐतिहासिक युद्ध		
युद्ध	**वर्ष**	**विवरण**
तराइन का प्रथम युद्ध	1191	अजमेर के चौहान सम्राट पृथ्वीराज तृतीय एवं मुहम्मद गौरी के मध्य, जिसमें पृथ्वीराज की विजय हुई।
तराइन का द्वितीय युद्ध	1192	पृथ्वीराज व गौरी के मध्य, जिसमें गौरी की विजय हुई।
रणथम्भौर का युद्ध	जुलाई, 1301	रणथम्भौर शासक राणा हम्मीरदेव चौहान एवं सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी के मध्य, जिसमें अलाउद्दीन खिलजी की जीत हुई।
चित्तौड़ का युद्ध	1303	मेवाड़ के गुहिल शासक राव रत्नसिंह एवं अलाउद्दीन खिलजी के बीच हुआ युद्ध, जिसमें रत्नसिंह शहीद हुआ और अलाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड़ का प्रशासन अपने पुत्र खिज़्र खाँ को सौंपकर चित्तौड़ का नाम खिज़ाबाद रख दिया था।
सिवाना का युद्ध	1308	अलाउद्दीन खिलजी ने वीर सातलदेव चौहान की सेना को हराकर सिवाना दुर्ग पर कब्जा किया और उसका नाम खैराबाद रखा।
जालौर का युद्ध	1311	सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी ने सोनगरा चौहान शासक कान्हड़देव को पराजित किया।
सारंगपुर का युद्ध	1437	मेवाड़ के महाराणा कुंभा ने मालवा (मांडू) के सुल्तान महमूद खिलजी को हराकर गिरफ्तार किया। इसी विजय के उपलक्ष्य में कुंभा ने कीर्ति स्तम्भ का निर्माण करवाया था।
खातोली का युद्ध	1517	मेवाड़ के राणा सांगा (संग्रामसिंह) ने दिल्ली सुल्तान इब्राहीम लोदी को हराया।
गागरोन का युद्ध	1519	राणा सांगा ने मालवा के सुल्तान महमूद खिलजी को हराकर बंदी बनाया।
बयाना का युद्ध	फरवरी, 1527	राणा सांगा ने बाबर की सेना को हराकर बयाना का किला जीता।
खानवा का युद्ध	मार्च, 1527	मुगल बादशाह मोहम्मद जहीरुद्दीन बाबर ने राणा सांगा को हराया।
गिरी-सुमेल का युद्ध	जनवरी, 1544	दिल्ली के अफगान बादशाह शेरशाह सूरी ने जोधपुर के राठौड़ शासक मालदेव को हराया एवं कहा कि "मुट्ठी भर बाजरे के लिए मैं हिन्दुस्तान की बादशाहत खो देता।"

सुपरसोनिक डोज : नगरों के प्राचीन उपनाम	
नगर / क्षेत्र	प्राचीन उपनाम / अन्य नाम
जैसलमेर, जोधपुर, बीकानेर	मरुत्रिकोण
जालौर, पाली, बाड़मेर, जोधपुर	गोडवाण
मण्डोर	माण्डव्यपुर
रामदेवरा	रुनेचा
जोधपुर	मारवाड, मरुधर, सूर्यनगरी, मरुवाड़
जालौर	नेहड, सत्यपुर
नागौर	अहिच्छत्रपुर (जांगल प्रदेश की राजधानी)
श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़	यौधेय प्रदेश (नाली क्षेत्र)
श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, चुरू, बीकानेर	थली क्षेत्र
चुरू, झुंझुनूं, सीकर	बागड़ प्रदेश, शेखावाटी प्रदेश
जयपुर	ढूंढाड़, (आमेर, ढूंढाड़ की राजधानी)
बैराठ	विराटनगर (मत्स्य संघ की राजधानी)
साम्भर	सपादलक्ष
अलवर	कुरुक्षेत्र, शाल्व, जनपद, आलोर

राजस्थान क्लासेज
का अपना ऐप
Rajasthan360
तैयारी करें स्मार्ट तरीके से...
PYQs Paper
Syllabus
Subject Wise E-Book
Short Notes
Handwritten Notes
Hello, Jay Bhawani
Home
Test Pass
HIGH COURT 4th GRADE
HINDI E-BOOK
Exam Oriented
Test Series
Paid Courses
PDF MCQ/ Notes
Job Alerts
Free PDF
Links
Current Affairs
Syllabus
Home
My Purchases
Downloads
अभी डाउनलोड करें
GET IT ON Google Play
App: Rajasthan360
Website: rajasthanclasses.in
हमसे जुड़ें
Telegram
@RAJASTHANCLASSES
@RAJASTHANCLASSES
हमसे संपर्क करें
WhatsApp
8107670333

बुक ऑर्डर करे
इस QR पर पेमेंट करके
Scan and Pay using any UPI app
8107670333 पर
स्क्रीन शॉट भेजें
8107670333
नाम, पूर्ण पता, पिन कोड,
मोबाइल नंबर भेजें।
राजस्थान क्लासेज
राजस्थान
इतिहास
(RPSC & RSSB परीक्षा हेतु उपयोगी)
✓ NCERT & RBSE का सार संग्रह।
✓ परीक्षाओं के बदलते पैटर्न पर आधारित।
✓ परीक्षा उपयोगी एवं प्रमाणिक तथ्य।
✓ सरल भाषा एवं सुस्पष्ट लिखावट।
GUARANTEED
BEST SELLER
GUARANTEED
BA-01
आदर्श कुमावत

लेखक परिचय

आदर्श कुमावत

(B.A., B.Ed., M.A. (इतिहास), BLIS, MLIS, PGDCA)

आदर्श कुमावत पिछले 7-8 वर्षों से अध्यापन कार्य से जुड़े हुए हैं। ग्रामीण माटी की सोंधी महक और समृद्ध शैक्षिक अनुभव के समन्वय से उन्होंने राजस्थान इतिहास की इस पुस्तक को अत्यंत सरल और रोचक शैली में प्रस्तुत किया है। अध्यापन के अपने दीर्घकालिक अनुभव के आधार पर उन्होंने पुस्तक में केवल उन्हीं तथ्यों को समाहित किया है जो प्रतियोगी परीक्षाओं की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। उनका यह लेखन प्रयास छात्रों के लिए एक सुगम मार्गदर्शिका का कार्य करेगा।

App Name: Rajasthan360

Telegram: t.me/rajasthanclasses

Website: rajasthanclasses.in

YouTube: RAJASTHANCLASSES

Published By

RAJASTHAN CLASSES

www.rajasthanclasses.in

support@rajasthanclasses.in

राजस्थान क्लासेज